INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RAS

(Rajasthan Administrative Service)

प्रारंभिक परीक्षा हेतु

RAJASTHAN PUBLIC SERVICE COMMISSION

भाग – 3

भारत का इतिहास + राजव्यवस्था

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**RAS (Rajasthan Administrative Service) प्रारंभिक परीक्षा हेतु**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "**Rajasthan State and Subordinate Services Combined Competitive Exams**" भर्ती परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें /*

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Order Link - https://bit.ly/ras-pre-notes

WhatsApp Link- https://wa.link/bc7sin

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	भारत का इतिहास	
1.	भारत के सांस्कृतिक आधार • सिन्धु एवं वैदिक कालः छठी शताब्दी ई. पू. की श्रमण परम्परा और नये धार्मिक विचार- आजीवक, बौद्ध तथा जैन	1
2.	प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ • मौर्य, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य, पल्लव एवं चोल	20
3.	प्राचीन भारत में कला एवं वास्तु	47
4.	भारतीय ज्ञान एवं मूल्य – व्यवस्था तथा वर्णाश्रम व्यवस्था, पुरुषार्थ संस्कार, दर्शन एवं शिक्षा	63
	मध्यकालीन भारत	
1.	अरबों का सिन्ध पर आक्रमण	73
2.	सल्तनतकाल प्रमुख सल्तनत शासकों की उपलब्धियाँ • विजयनगर की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ	76
3.	मुगलकाल राजनीतिक चुनौतियाँ एवं सुलह-अफगान, राजपूत, दक्कनी राज्य और मराठा	90
4.	मध्यकाल में कला एवं वास्तु • चित्रकला एवं संगीत का विकास	95
5.	भक्ति तथा सूफी आंदोलन • धार्मिक एवं साहित्यिक योगदान	102
	आधुनिक भारत का इतिहास	
	(प्रारम्भिक 19वीं शताब्दी से 1964 तक)	
1.	आधुनिक भारत का विकास ○ यूरोपीय कम्पनियों का आगमन	108

	○ मुग़ल साम्राज्य का पतन ○ मराठा साम्राज्य ○ गवर्नर, गवर्नर जनरल & वायसराय इत्यादि	
2.	राष्ट्रवाद का उदय • 1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह • 1857 की क्रांति • बौद्धिक जागरण; प्रेस; पश्चिमी शिक्षा। • 19वीं शताब्दी के दौरान सामाजिक -धार्मिक सुधारः विभिन्न नेता एवं संस्थाएँ	128
3.	स्वतंत्रता संघर्ष एवं भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन • विभिन्न अवस्थाएँ, धाराएँ, • महत्वपूर्ण योगदानकर्ता एवं देश के अलग-अलग हिस्सों का योगदान	151
4.	स्वंत्रता के आसपास का भारत एवं राष्ट्र निर्माण	198
	<u>भारतीय संविधान, राजनीतिक व्यवस्था एवं शासन प्रणाली</u>	
1.	संविधान सभा एवं ऐतिहासिक प्रष्ठभूमि	206
2.	भारतीय संविधान की विशेषताएं	214
3.	संवैधानिक संशोधन	217
4.	उद्देशिका (प्रस्तावना)	224
5.	मौलिक अधिकार	229
6.	नीति के निदेशक तत्व	238
7.	मूल कर्तव्य	242
8.	राष्ट्रपति	249
9.	प्रधानमंत्री एवं मंत्रिपरिषद्	270
10.	भारतीय संसद	277
11.	उच्चतम न्यायालय और न्यायिक पुनरावलोकन	289

12.	निर्वाचन आयोग	297
13.	नीति आयोग	301
14.	राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग	305
15.	राष्ट्रीय महिला आयोग	307
16.	राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण	308
17.	लोकनीति	309
18.	नागरिक चार्टर	310
19.	लोकपाल	312
20.	केन्द्रीय सर्तकता आयोग	315
21.	केन्द्रीय सूचना आयोग	320
22.	लोक सेवा आयोग	325

भारत का इतिहास

अध्याय – 1

भारत के सांस्कृतिक आधार

सिन्धु घाटी सभ्यता

इतिहास का अध्ययन : -

इतिहास का अध्ययन करने के लिए इसको तीन भागों में विभाजित किया जाता है -

1. प्रागैतिहासिक काल
2. आद्य ऐतिहासिक काल
3. ऐतिहासिक काल

1. प्रागैतिहासिक काल -

- वह काल जिसमें कोई भी लिखित स्त्रोत नहीं मिला अर्थात् सभ्यता और संस्कृति का वह युग जिसमें मानव की उत्पत्ति मानी जाती है।
- **मानव की उत्पत्ति प्रागैतिहासिक काल** से ही हुई है।

2. आद्य ऐतिहासिक काल –

- आद्य ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसके लिखित स्त्रोत मिले लेकिन उसको पढ़ा नहीं जा सका जैसे – सिन्धु घाटी सभ्यता उसमें जो भाषा थी उसको आज तक पढ़ा नहीं गया है इसलिए इस सभ्यता को आद्य ऐतिहासिक काल की श्रेणी में रखते हैं।
- इस काल की लिपि को **सर्पिलाकार लिपि** कहते हैं क्योंकि सिन्धु घाटी सभ्यता की लिपि दाईं से बाईं ओर लिखी जाती थी ।
- इस लिपि को गोमूत्र लिपि एवं "बूस्टोफिदन" लिपि के नाम से भी जानते हैं ।
- इसी प्रकार ईरान और इराक की मेसोपोटामिया की सभ्यता इसी काल की हैं ।
- **राजस्थान में इस काल की सभ्यता में कालीबंगा** की सभ्यता देखने को मिलती है अर्थात् कालीबंगा की सभ्यता इसी काल की सभ्यता है।

3. ऐतिहासिक काल:-

ऐतिहासिक काल वह काल होता है जिसमें लिखित स्त्रोत मिले और उनको पढ़ा भी जा सका जैसे **वैदिक काल** जिसमें वेदों की रचना हुई थी। और उनको पढ़ा भी जा सकता है।

सिन्धु घाटी सभ्यता

- यह दक्षिण एशिया की प्रथम नगरीय सभ्यता थी । यह 13 लाख km वर्ग में फैली हुई है
- यह भारत पाकिस्तान एव अफगानिस्तान में फैली हुई है
- यह कास्य युगीन सभ्यता है
- इस सभ्यता को सबसे पहले हड़प्पा सभ्यता नाम दिया गया क्योंकि सबसे पहले 1921 में **हड़प्पा नामक स्थल की खोज दयाराम साहनी** द्वारा की गई थी।

इस सभ्यता को निम्न अन्य नामों से भी जाना जाता है

- सैंधव सभ्यता- जॉन मार्शल के द्वारा कहा गया ।
- सिन्धु सभ्यता - मार्टियर व्हीलर के द्वारा कहा गया
- वृहतर सिन्धु सभ्यता – ए. आर-मुगल के द्वारा कहा गया
- प्रथम नगरीय क्रान्ति- गार्डन चाइल्ड के द्वारा कहा गया
- सरस्वती सभ्यता के द्वारा कहा गया
- मेलूहा सभ्यता के द्वारा कहा गया
- कांस्यकालीन सभ्यता के द्वारा कहा गया
- यह सभ्यता मिश्र एवं मेसोपोटामिया सभ्यताओं के समकालीन थी।
- इस सभ्यता का सर्वाधिक **फैलाव घग्घर हाकरा नदी के किनारे** है। अतः इसे सिन्धु सरस्वती सभ्यता भी कहते हैं ।
- 1902 में लार्ड कर्जन ने जॉन मार्शल को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक बनाया।
- जॉन मार्शल को हड़प्पा व मोहनजोदड़ों की खुदाई का प्रभार सौंपा गया।
- 1921 में जॉन मार्शल के निर्देशन पर दयाराम साहनी ने हड़प्पा की खोज की।
- 1922 में **राखलदास बनर्जी ने मोहनजोदड़ों** की खोज की।

सिन्धु सभ्यता की प्रजातियाँ -

- प्रोटो-आस्ट्रेलायड - सबसे पहले आयी
- भूमध्यसागरीय - मोहनजोदड़ों की कुल जनसंख्या में सर्वाधिक है ।
- मंगोलियन - मोहनजोदड़ों से प्राप्त पुजारी की मूर्ति इसी प्रजाति की है ।

- **सिन्धु सभ्यता की तिथि**

कार्बन 14 (C^{14}) - 2600 -1900 ई.पू.-NCERT के अनुसार
ह्विलेर - 2500-1700 ई.पू.
मार्शल - 3250-2750 ई.पू.

सभ्यता का विनाश

नदी में बाढ़ के कारण	**मार्शल मैंके एस.आर.राव**
बाह्य आक्रमण	**गार्डन चाइल्ड व्हीलर पिगट**
जलवायु परिवर्तन	**आरेल स्टाइन अमला नन्द घोष**
प्राकृतिक आपदा	**केन्यू. आर. कनेडी**

इस सभ्यता का विस्तार

- इस सभ्यता का विस्तार **पाकिस्तान और भारत** में ही मिलता है।

पाकिस्तान में सिन्धु सभ्यता के स्थल

- सुत्कांगेडोर
- सोत्काकोह
- बालाकोट
- डाबर कोट

- **सुत्कांगेडोर**- इस सभ्यता का सबसे पश्चिमी स्थल है जो दाश्क नदी के किनारे अवस्थित है । इसकी खोज आरेल स्टाइन ने की थी।
- सुत्कांगेडोर को हड़प्पा के व्यापार का चौराहा भी कहते है।

मोहनजोदड़ों	**हड़प्पा**
चन्हूदड़ों	डेराइस्माइल खाँ
कोटदीजी	रहमान टेरी
आमरी	गुमला
अलीमुराद	जलीलपुर

भारत में सिन्धु सभ्यता के स्थल,

- **हरियाणा- राखीगढ़ी,** सिसवल कुणाल, बणावली, मितायल, बालू
- **पंजाब** – कोटलानिहंग खान चक्र 86 बाड़ा, संघोल, टेर माजरा रोपड़ (रूपनगर) - स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद खोजा गया पहला स्थल
- **कश्मीर** - माण्डा
  चिनाब नदी के किनारे
  सभ्यता का उत्तरी स्थल
- **राजस्थान - कालीबंगा, बालाथल**
  तरखान वाला डेरा
- **उत्तर प्रदेश**- आलमगीरपुर
  सभ्यता का पूर्वी स्थल
  - माण्डी
  - बड़गाँव
  - हलास
  - **सनौली**

- **गुजरात**
- **धौलावीरा,** सुरकोटड़ा, देसलपुर रंगपुर, **लोथल,** रोजदिख्खी तेलोद, नगवाड़ा, कुन्तासी, शिकारपुर, नागेश्वर, मेघम प्रभासपाटन भोगन्नार
- **महाराष्ट्र**- दैमाबाद
  सभ्यता की दक्षिणतम सीमा
  फैलाव- त्रिभुजाकार
  क्षेत्रफल- 1299600 वर्ग किलोमीटर

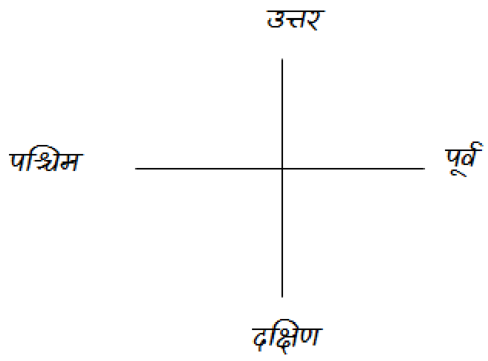

माण्डा (चिनाव नदी)

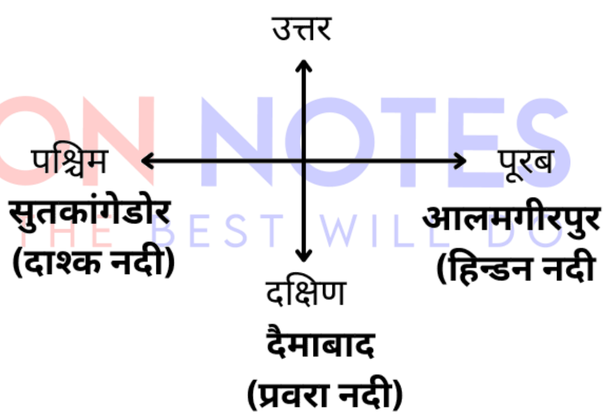

स्थल	**नदियों के नाम**	**उत्खन्न का वर्ष**	**उत्खननकर्ता**	**वर्तमान स्थिति**
हड़प्पा	रावी	1921	दयाराम साहनी और माधवस्वरूप वत्स	पश्चिमी पंजाब का साहिवाल जिला (पाकिस्तान)
मोहनजोदड़ों	सिन्धु	1922	राखलदास बनर्जी	सिन्ध प्रांत का लरकाना जिला (पाकिस्तान)
कालीबंगा	घग्घर	1961	बी. बी. लाल और बी. के. थापर	राजस्थान का हनुमानगढ़ जिला (भारत)
कोटदीजी	सिन्धु	1955	फजल अहमद	सिन्ध प्रांत का खैरपुर (पाकिस्तान)
रंगपुर	भादर	1953-54	रंगनाथ राव	गुजरात का काठियावाड़ क्षेत्र (भारत)
रोपड़	सतलज	1953-56	यज्ञदत्त शर्मा	पंजाब का रोपड़ ज़िला (भारत)
लोथल	भोगवा	1955तथा 1962	रंगनाथ राव	गुजरात का अहमदाबाद ज़िला (भारत).
आलमगीरपुर	हिंड़न	1958	यज्ञदत्त शर्मा	उत्तर प्रदेश का मेरठ जिला- (भारत)

बनावली	रंगोई	1974	रविन्द्र नाथ : विष्ट	हरियाणा का फतेहाबाद जिला (भारत)
धौलावीरा	मनहार एवं मद्सार	1990-91	रविन्द्र नाथ विष्ट	गुजरात का कच्छ जिला (भारत)

- अभी तक सिन्धु सभ्यता के 2800 से अधिक स्थलों की खोज हो चुकी है।

➢ सिन्धु सभ्यता के 7 नगर

1. हड़प्पा
2. बनावली
3. मोहनजोदड़ों
4. धौलावीरा
5. चन्हूदड़ों
6. लोथल
7. कालीबंगा

प्रमुख स्थल एवं विशेषताएँ

हड़प्पा

रावी नदी के किनारे पर स्थित इस स्थल की खोज **दयाराम साहनी** ने की थी ।

खोज- वर्ष **1921** में

उत्खनन-

i. 1921-24 व 1924-25 में साहनी द्वारा ।
ii. 1926-27 से 1933-34 तक माधव स्वरूप वत्स द्वारा
iii. 1996 में मार्टीमर व्हीलर द्वारा

- हड़प्पा 5 किमी. की परिधि में फैला हुआ था जो प्रशासनिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- इसे 'तोरण द्वार का नगर तथा 'अर्द्ध औद्योगिक नगर' कहा जाता है।
- **पिगट ने** हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों को इस सभ्यता की **जुड़वा राजधानी** कहा है। इन दोनों के बीच की दूरी 640 किलोमीटर है ।
- 1826 में चार्ल्स मैसन ने यहाँ के एक टीले का उल्लेख किया, बाद में उसका नाम व्हीलर ने MOUND-AB दिया।
- हड़प्पा के अन्य टीले का नाम MOUND-F है ।
- हड़प्पा से प्राप्त **कब्रिस्तान को R-37** नाम दिया ।
- यहाँ से प्राप्त समाधि को HR नाम दिया ।
- हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों में पूर्व व पश्चिम में दो टीले मिलते हैं ।
- स्वस्तिक का निशान ,मोहरे
- नदी के किनारे 12 अन्नागार मिलते है
  पूर्वी टीले पर नगर पश्चिमी टीले पर-दुर्ग
- हड़प्पा के अवशेषों में **दुर्ग, रक्षा प्राचीन निवासगृह चबूतरा, अन्नागार तथा ताम्बे की मानव आकृति** महत्त्वपूर्ण है।

प्रश्न- हड़प्पा सभ्यता की उत्पत्ति के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौनसा जोड़ा सही नहीं हैं?

A. ई. जे. एच. मैके - सुमेर से लोगों का पलायन
B. मार्टीमर व्हीलर - पश्चिमी एशिया से सभ्यता के विचार का प्रवसन
C. अमलानंद घोष - हड़प्पा सभ्यता का उद्भव पूर्व हड़प्पा सभ्यता की परिपक्वता से हुआ
D. एम.आर. रफीक. मुगल - हड़प्पा सभ्यताने मेसोपोटामिया सभ्यता से प्रेरणा ली।

उत्तर – D

मोहनजोदड़ों

- **सिन्धु नदी** के तट पर मोहनजोदड़ों की खोज सन् 1922 में **राखलदास बनर्जी** ने की थी। उत्खनन - राखलदास बनर्जी (1922-27)
  - मार्शल
  - जे.एच. मैके
  - जे.एफ. डी

स्थिति-

- लरकाना (सिंध प्रान्त)पाकिस्तान
- सिन्धु नदी के तट पर
- हड़प्पा सभ्यता का प्रसिद्ध पुरास्थल मोहनजोदड़ों देखने में आध्यात्मिक नगर जैसा प्रतीत होता है।
- मोहनजोदड़ों का नगर **कच्ची ईंटों** के चबूतरे पर निर्मित था।
- मोहनजोदड़ों सिन्धी भाषा का शब्द, अर्थ- **मृतकों का टीला**
- मोहनजोदड़ों को **स्तूपों का शहर** भी कहा जाता है।
- बताया जाता है कि यह शहर बाढ़ के कारण सात बार उजड़ा एवं बसा।
- यहाँ से यूनीकॉर्न प्रतीक वाले **चाँदी के दो सिक्के** मिले हैं।
- **वस्त्र निर्माण** का प्राचीन साक्ष्य यहाँ से मिलता है। कपास के प्रमाण – मेहरगढ़
- सुमेरियन नाव वाली मुहर यहाँ से मिली है।
- मोहनजोदड़ों की सबसे बड़ी इमारत संरचना यहाँ से प्राप्त अन्नागार है । (राजकीय भण्डारागार)
- यहाँ से एक **20 खम्भों वाला सभा भवन** मिला है। मैके ने इसे 'बाजार' कहा है।
- इसमे उत्तर व दक्षिण में सीढियां बनी हुई है
- तीन तरफ बरामदे है बरामदे के पीछे कई कक्ष है
- सूती कपड़ो के साक्ष्य मिले है
- हाथी का कपाल खंड मिला है

प्रश्न-3. वह सील जिस पर एक योगी की आकृति बनी हुई है, जो पशुपति शिव जैसी दिखाई देती है मिली है?

A. मोहनजोदड़ो B. हड़प्पा
C. लोथल D. कालीबंगा

उत्तर – A

प्रश्न-4. सर्वप्रथम मानव ने निम्न किस धातु का उपयोग किया?

A. सोना B. चाँदी
C. तांबा D. लोहा

उत्तर – C

प्रश्न-5. किस हड़प्पा स्थल से एक साथ दो फसलें उगाई जाने के साक्ष्य मिलते हैं?

A. हड़प्पा B. रोपड़
C. बणावली D. कालीबंगा

उत्तर - D

प्रश्न-6. 'यज्ञ' संबंधी विधि विधानों का पता चलता है?

A. ऋग्वेद से B. सामवेद से
C. ब्राह्मण ग्रंथों से D. यजुर्वेद से

उत्तर – D

प्रश्न-7. प्रजापति की पुत्रियों के नाम है?

A. ऊषा व अदिति B. सभा व समिति
C. घोषा व अपाला D. उमा व सरस्वती

उत्तर – B

प्रश्न-8. ऋग्वेद में आर्य शब्द किसका वाचक है?

A. जाति B. धर्म
C. व्यवसाय D. गुण

उत्तर – D

प्रश्न-9. चारों आश्रमों का उल्लेख किस उपनिषद् में हुआ है?

A. मुण्डकोपनिषद् B. छान्दोग्योपनिषद्
C. वृहदारण्यकोपनिषद् D. जाबालोपनिषद्

उत्तर – D

प्रश्न-10. 16 महाजनपदों की सूची किस बौद्ध ग्रंथ में मिलती है?

A. त्रिपिटक B. अंगुत्तर निकाय
C. ललित विस्तार D. दीप वंश

उत्तर – B

प्रश्न-11. निम्नलिखित में से कौन - सा सिद्धांत जैन धर्म से संबंधित नहीं है?

A. स्यादवाद B. अनेकांतवाद
C. सर्वास्तिवाद D. पंचमहाव्रत

उत्तर – C

प्रश्न-12. योगाचार्य दर्शन संप्रदाय संबंधित है?

A. सांख्य योग से B. शंकर वेदांत से
C. हीनयान से D. महायान से

उत्तर - D

अध्याय – 2

प्रमुख राजवंशों के महत्वपूर्ण शासकों की उपलब्धियाँ

मौर्य वंश

राजनीतिक इतिहास

- शासन काल चतुर्थ शताब्दी ई.पू. से द्वितीय शताब्दी ई.पू. तक (321-185 ई.पू.)
- स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा आचार्य चाणक्य (विष्णुगुप्त) के सहयोग से (मगध में)
- मौर्य शासन से पहले मगध पर नंद वंश के शासक धनानन्द का शासन था।
- मौर्य राजवंश ने लगभग 137 वर्ष तक भारत में राज किया।
- राजधानी पाटलिपुत्र (पटना)

आचार्य चाणक्य

- जन्म तक्षशिला में (आचार्य)
- अन्य नाम विष्णुगुप्त, कौटिल्य
- चन्द्रगुप्त का प्रधानमंत्री तथा प्रधान पुरोहित आचार्य चाणक्य थे ।
- **पुराणों में चाणक्य को "द्विजर्षभ" कहा गया है जिसका मतलब है श्रेष्ठ ब्राह्मण**
- चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के बाद भी बिन्दुसार के समय भी चाणक्य प्रधानमंत्री बना रहा (कुछ समय के लिए)
- चाणक्य तक्षशिला विश्वविद्यालय में आचार्य रहे थे।
- इन्होंने **अर्थशास्त्र नामक पुस्तक** की रचना की ।
- अर्थशास्त्र मौर्यकालीन साम्राज्य की राजव्यवस्था एवं शासन प्रणाली पर प्रकाश डालता है।
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण तथा 180 प्रकरण हैं ।

चन्द्रगुप्त मौर्य (321 – 298 ई.पू.)

- चन्द्रगुप्त मौर्य 321 ई.पू. धनानन्द को हरा कर मगध का शासक बना।
- इसने सिकन्दर के उत्तराधिकारी सेल्यूकस को भी हराया था।
- सेल्यूकस की पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ हुआ।
- **उपाधियाँ** - पाटलिपुत्रक (पालिब्रोथस)
- भारत का मुक्तिदाता
- प्रथम भारतीय साम्राज्य का संस्थापक

प्रमुख तथ्य : चन्द्रगुप्त मौर्य

सेल्युकस से युद्ध और संधि (305 ई.पू.)

चन्द्रगुप्त के शासनकाल की सबसे बड़ी सैन्य सफलता सिकंदर के सेनापति **सेल्युकस निकेटर** को हराना थी।

- **संधि की शर्तें:** युद्ध के बाद हुई संधि में सेल्युकस ने चन्द्रगुप्त को चार क्षेत्र सौंपे: **एरिया (हेरात), अराकोसिया**

(कंधार), जेड्रोसिया (बलूचिस्तान) *और* ***पेरिपेनिसदाई (काबुल)।***

- ***वैवाहिक संबंध:*** *सेल्युकस ने अपनी पुत्री* ***हेलेना*** *का विवाह चन्द्रगुप्त से किया।*
- ***उपहार:*** *चन्द्रगुप्त ने बदले में सेल्युकस को* ***500 हाथी*** *उपहार में दिए।*
- ***राजदूत:*** *सेल्युकस ने अपना राजदूत* ***मेगस्थनीज*** *चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा, जिसने 'इंडिका' लिखी।*
- *यूनानी लेखकों ने* ***पाटलिपुत्र को पालिब्रोथा के नाम से संबोधित*** *किया है।एंव इन्हे सिंड्रोकोट्स व एन्डरोकोट्स के रूप में उल्लेखित किया ।*
- ***'चन्द्रगुप्त' नाम का प्राचीनतम उल्लेख रुद्रदामन के जूनागढ़ अभिलेख*** *में प्राप्त हुआ है।*
- *जीवन के अंतिम दिनों में चन्द्रगुप्त ने* ***श्रवणबेलगोला में जैन विधि से उपवास पद्धति*** *(संलेखना पद्धति)* ***द्वारा प्राण त्याग दिये।***
- ***चन्द्रगुप्त के समय में भूमि पर राज्य तथा कृषक दोनों का अधिकार था।***
- *आय का प्रमुख स्त्रोत भूमिकर (भाग) था। संभवतः कर (Tax) उपज का 1/6 होता था।*
- ***मुद्रा - पंचमार्क या आहत सिक्के।***
- *इसी के काल से सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में पाषाण का प्रयोग किया गया।*
- *चन्द्रगुप्त जैन धर्म का अनुयायी था ।*

<u>मेगस्थनीज</u>

- *मेगस्थनीज सेल्यूकस 'निकेटर' का राजदूत था ।*
- ***इसने 'इंडिका' नामक पुस्तक की रचना की जिससे मौर्यकालीन शासन व्यवस्था की जानकारी मिलती है।***
- *मेगस्थनीज भारत आने वाला प्रथम राजदूत था ।*
- *चन्द्रगुप्त के संरक्षण में प्रथम जैन संगीति पाटलिपुत्र में हुई थी।*
- *चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपना शासन अपने पुत्र बिन्दुसार को सौंप दिया था ।*

<u>बिन्दुसार (298-273 ई.पू.)</u>

- *चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बिन्दुसार मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा।*
- *बिन्दुसार के काल में भी चाणक्य प्रधानमंत्री था।*
- *बिन्दुसार आजीवक संप्रदाय का अनुयायी था।*
- *बिन्दुसार ने एंटियोकस से मदिरा, सूखा अंजीर तथा एक दार्शनिक भेजने की मांग की थी, परन्तु एंटियोकस ने मदिरा तथा सूखे अंजीर तो भेजे लेकिन दार्शनिक नहीं भेजे।*
- ***अमित्रघात या अमित्रोचेट्स*** *अर्थात् 'शत्रुओं का वध करने वाला' बिन्दुसार की उपाधि थी। उसका अन्य नाम भद्रसार तथा सिंहसेन भी था।*
- ***तक्षशिला का विद्रोह:*** *बिन्दुसार के शासनकाल में तक्षशिला में दो बड़े विद्रोह हुए।*
- *पहले विद्रोह को दबाने के लिए उन्होंने अपने पुत्र* ***अशोक*** *को भेजा।*
- *दूसरे विद्रोह को दबाने के लिए उन्होंने अपने बड़े पुत्र* ***सुसीम*** *को भेजा।*

<u>सम्राट अशोक (273 – 232 ई.पू.)</u>

- *अशोक अपने* ***पिता बिन्दुसार*** *के शासन काल में प्रान्तीय प्रशासक (उज्जयनी) के पद पर था ।*
- ***माता-पिता:*** *अशोक के पिता* ***बिन्दुसार*** *और माता का नाम* ***शुभद्रांगी*** *(जनपद कल्याणी) था।*
- *बिन्दुसार की मृत्यु के बाद अशोक को सत्ता प्राप्त करने के लिए अपने भाइयों (सुसीम आदि) के साथ कड़ा संघर्ष करना पड़ा। दीपवंश और महावंश के अनुसार, उन्होंने अपने 99 भाइयों की हत्या कर सिंहासन प्राप्त किया, हालांकि इतिहासकार इसे अतिशयोक्ति मानते हैं।*
- *सर्वाधिक अभिलेखीय प्रमाण इसी के काल के मिलते हैं ।*
- *उन्हें 'चक्रवर्ती सम्राट' और 'देवानांप्रिय' (देवताओं का प्रिय) कहा जाता है। उन्होंने न केवल युद्धों से बल्कि 'धम्म' (धर्म) के माध्यम से भी विश्व पर विजय प्राप्त की।*
- *सर्वप्रथम* ***मास्की लेख*** *में अशोक का नाम पढ़ा गया।*
- *अशोक महान ने श्रीनगर की स्थापना की।*
- *अशोक अपने प्रारम्भिक जीवन में भगवान शिव का उपासक था।*

<u>कलिंग युद्ध</u>

- *मगध के पड़ोस में कलिंग शक्तिशाली राज्य था।*
- *अपने राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में 261 ई.पू. में अशोक ने कलिंग के साथ युद्ध किया था।*
- *यह सूचना अशोक के 13वें बड़े शिलालेख से मिलती है।*
- *युद्ध की विभीषिका और खून-खराबे को देखकर अशोक का मन ग्लानि से भर गया। उन्होंने हमेशा के लिए युद्ध का त्याग कर दिया और* ***'भेरी घोष'*** *(युद्ध की घोषणा) के स्थान पर* ***'धम्म घोष'*** *को अपनाया*
- *अशोक महान ने अभिलेखों के माध्यम से राज्य की प्रजा को अपने संदेश पहुँचाये।*

❖ ***अशोक के शिलालेख (Edicts)***

- *अशोक पहले ऐसे भारतीय शासक थे जिन्होंने प्रजा को शिलालेखों के माध्यम से सीधे संबोधित किया।*
- ***लिपियाँ:*** *इनके शिलालेख* ***ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरमाइक और ग्रीक*** *लिपियों में मिलते हैं।*
- ***खोज:*** *1750 ई. में टी. फेन्थेलर ने इन्हें खोजा, लेकिन सबसे पहले* ***जेम्स प्रिंसेप*** *ने 1837 ई. में इन्हें पढ़ने में सफलता प्राप्त की।*

स्तंभ लेख: *सारनाथ का प्रसिद्ध* ***सिंह स्तंभ*** *(Lion Capital) अशोक ने ही बनवाया था, जो आज भारत का राष्ट्रीय चिह्न है।*

मंदिर वास्तुकला

- मंदिर निर्माण की प्रक्रिया का आरंभ तो मौर्य काल से ही शुरू हो गया था किंतु आगे चलकर उसमें सुधार हुआ और गुप्त काल को मंदिरों की विशेषताओं से लैस देखा जाता है।
- संरचनात्मक मंदिरों के अलावा एक अन्य प्रकार के मंदिर थे जो **चट्टानों को काटकर** बनाए गए थे। इनमें प्रमुख है **महाबलिपुरम का रथ-मंडप जो 7 वीं शताब्दी का है।**
- गुप्तकालीन मंदिर आकार में बेहद छोटे हैं । एक वर्गाकार चबूतरा (ईंट का) है जिस पर चढ़ने के लिये सीढ़ी है तथा बीच में चौकोर कोठरी है जो गर्भगृह का काम करती है।
- कोठरी की छत भी सपाट है व अलग से कोई प्रदक्षिणा पथ भी नहीं है।
- इस प्रारंभिक दौर के निम्नलिखित मंदिर हैं जो कि भारत के प्राचीनतम संरचनात्मक मंदिर हैं: तिगवा का विष्णु मंदिर (जबलपुर, मध्यप्रदेश), भूमरा का शिव मंदिर (सतना, मध्यप्रदेश), नचना कुठार का पार्वती मंदिर (पन्ना, मध्यप्रदेश), देवगढ़ का दशावतार मंदिर (ललितपुर, उत्तरप्रदेश), भीतरगाँव का मंदिर (कानपुर, उत्तरप्रदेश) आदि।
- मंदिर स्थापत्य संबंधी अन्य नाम, जैसे- पंचायतन, भूमि, विमान भद्रथ, कर्णरथ और प्रतिरथ आदि भी प्राचीन ग्रन्थों में मिलते हैं।
- आगे ब्राह्मण हिन्दू धर्म के मंदिरों के निर्माण में तीन प्रकार की शैलियों नागर, द्रविड़ और बेसर शैली का प्रयोग किया गया।

मंदिर स्थापत्य

नागर	द्रविड़	बेसर
पाल उपशैली	पल्लव उपशैली	चालुक्य
ओडिशा उपशैली	चोल उपशैली	राष्ट्रकूट
खजुराहो उपशैली	पाण्डय उपशैली	होयसल
सोलंकी उपशैली	विजयनगर उपशैली	काकतीय
	नायक उपशैली	

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

क्रम	मंदिर	स्थल	कालखण्ड
1	गोलाकार ईंट व इमारती लकड़ी का मंदिर	बैराट ज़िला राजस्थान	तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व
2	साँची का मंदिर- 40	साँची (मध्य प्रदेश)	तृतीय शताब्दी ईसा पूर्व
3	साँची का मंदिर-18	साँची (मध्य प्रदेश)	द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व
4	प्राचीनतम संरचनात्मक मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	5 / 6 शताब्दी ईसा पूर्व
5	साँची का मंदिर-17	साँची (मध्य प्रदेश)	5 वी शताब्दी
6	लड़खन मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	6 वी शताब्दी
7	दुर्गा मंदिर	ऐहोल (कर्नाटक)	550 ईस्वी सन्

प्रश्न - निम्नलिखित सूर्य मंदिरों में कौनसा पाटन, गुजरात में स्थित है?

A. कोणार्क **B. मोढ़ेरा**

C. मार्तण्ड **D. दक्षिणार्क**

उत्तर - B

भारतीय मंदिरों के स्थापत्य की नागर, द्रविड़ और वेसर शैलियाँ

पूर्व मध्यकालीन शिल्पशास्त्रों में मंदिर स्थापत्य की तीन बड़ी शैलियाँ बताई गई हैं – नागर शैली, द्रविड़ शैली और वेसर शैली।

नागर शैली – नागर शैली का प्रचलन **हिमालय और विन्ध्य पहाड़ों के बीच** की धरती में पाया जाता है।

द्रविड़ शैली – द्रविड़ शैली **कृष्णा और कावेरी नदियों के बीच** की भूमि में अपनाई गई।

वेसर शैली – वेसर शैली **विन्ध्य पहाड़ों और कृष्णा नदी के बीच** के प्रदेश से सम्बन्ध रखती है।

नागर शैली

- नागर शैली के सबसे प्राचीन उदाहरण **गुप्तकालीन मंदिरों** में मिलते हैं। इनमें विशेष रूप से **देवगढ़ का दशावतार मंदिर** तथा **भीतरगाँव का ईंट-निर्मित मंदिर** उल्लेखनीय हैं।

- नागर शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ हैं—**इसकी भूमि योजना (Plan)** और **शिखर**।

I. नागर मंदिर की भूमि सामान्यतः **वर्गाकार या आयताकार** होती है। इसके बाह्य भाग में क्रमिक उभार होते हैं, जिन्हें **रथ** कहा जाता है। एक-एक उभार होने पर मंदिर **त्रिरथ**, तीन-तीन होने पर **सप्तरथ** तथा चार-चार होने पर **नवरथ** कहलाता है।

II. मंदिर के शीर्ष पर ऊँचा **शिखर** होता है।

III. नागर शैली के शिखर को **रेखा शिखर** कहा जाता है, जो नीचे से ऊपर की ओर क्रमशः संकरा होता जाता है।

IV. सामान्यतः नागर मंदिर में **गर्भगृह** और उसके सामने **मंडप** होता है। गर्भगृह अपेक्षाकृत ऊँचा तथा मंडप छोटा होता है।

V. गर्भगृह के ऊपर **वक्राकार शिखर** निर्मित होता है, जिसके शीर्ष पर **आमलक** और **कलश** स्थित होते हैं।

VI. कुछ क्षेत्रों, विशेषतः **ओडिशा (कलिंग नागर उपशैली)** में मंदिर चार भागों—**गर्भगृह (देउल), जगमोहन, नाट्यमंदिर और भोगमंदिर**—में विभक्त मिलते हैं।

VII. प्रारंभिक नागर मंदिरों में **स्तम्भयुक्त मंडप** भी पाए जाते हैं।

VIII. 8वीं शताब्दी के बाद नागर शैली में क्षेत्रीय विविधताएँ विकसित हुईं, किंतु **त्रिकोणीय भूमि योजना और ऊपर की ओर संकुचित शिखर** इसकी सर्वत्र समान विशेषताएँ बनी रहीं।

IX. **भुवनेश्वर स्थित लिंगराज मंदिर** नागर शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

द्रविड़ शैली

द्रविड़ स्थापत्य शैली का संबंध मुख्यतः **दक्षिण भारत और दक्कन क्षेत्र** के मंदिरों से है। इसके कुछ प्रारंभिक उदाहरण **दक्कन (ऐहोल–बादामी क्षेत्र)** में मिलते हैं, जैसे **लाड़खान मंदिर, कोन्ठगुडि मंदिर और मेगुती जैन मंदिर**।

I. द्रविड़ शैली की प्रमुख विशेषता इसका **पिरामिडीय विमान** है, जिसमें मंज़िल-दर-मंज़िल संरचना ऊपर की ओर संकुचित होती जाती है। शीर्ष पर **स्तूपिका** स्थित होती है।

II. समय के साथ विमानों पर **मूर्तिकला और अलंकरण** की संख्या बढ़ती गई।

III. द्रविड़ मंदिरों में **आयताकार गर्भगृह** तथा उसके चारों ओर **प्रदक्षिणा पथ** होता है।

IV. आगे चलकर **स्तम्भयुक्त विशाल मंडप, गलियारे और ऊँचे गोपुर** विकसित हुए।

V. इस शैली में **पिरामिडीय विमान और शिखर** प्रमुख लक्षण हैं।

VI. द्रविड़ मंदिरों में **स्तम्भों का व्यापक प्रयोग** होता है। शिव मंदिरों में **नंदी मंडप** तथा विष्णु मंदिरों में **गरुड़ मंडप** पाया जाता है।

VII. उत्तर भारतीय मंदिरों के विपरीत, दक्षिण भारतीय मंदिरों में **चारदीवारी (प्राकार)** होती है।

VIII. **कांचीपुरम स्थित कैलासनाथ मंदिर**, जिसे **नरसिंहवर्मन द्वितीय (राजसिंह)** ने बनवाया, द्रविड़ स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।

वेसर शैली

वेसर शैली का विकास **पूर्व मध्यकाल** में हुआ। यह एक **मिश्रित स्थापत्य शैली** है जिसमें **नागर और द्रविड़—दोनों के तत्व** मिलते हैं।

I. इसके प्रमुख उदाहरण **कल्याणी के परवर्ती चालुक्यों** तथा **होयसाल वंश** द्वारा निर्मित मंदिर हैं।

II. इसमें द्रविड़ शैली के समान विमान होते हैं, किंतु वे अपेक्षाकृत **कम ऊँचाई और सघन व्यवस्था** वाले होते हैं।

III. कुछ मंदिरों में **बौद्ध चैत्य जैसी अर्धवृत्ताकार योजना** मिलती है, जैसे **ऐहोल का दुर्गा मंदिर**।

IV. **पापनाथ मंदिर** और **पट्टदकल** के मंदिर वेसर शैली की क्षेत्रीय विविधता के प्रमुख उदाहरण हैं।

खजुराहो मंदिर : नागर शैली के हिन्दू व जैन मंदिर

- मध्य प्रदेश में स्थित **खजुराहो के मंदिरों** का निर्माण **चंदेल वंश के शासकों** द्वारा लगभग **900 से 1130 ईस्वी** के मध्य कराया गया था। ये मंदिर अपनी **नागर स्थापत्य शैली** तथा **अत्यंत उत्कृष्ट मूर्तिकला**, विशेष रूप से **कामुक मूर्तियों**, के लिए विश्व-प्रसिद्ध हैं।
- खजुराहो के मंदिर **हिन्दू एवं जैन धर्म** से संबंधित हैं। यहाँ स्थित मंदिरों में सबसे प्रसिद्ध **कंदारिया महादेव मंदिर** है, जो शिव को समर्पित है और नागर शैली का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है।
- खजुराहो के मंदिर **भारतीय स्थापत्य एवं मूर्तिकला** के अद्भुत नमूने हैं। इनके असाधारण कलात्मक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को ध्यान में रखते हुए **UNESCO** ने इन्हें **1986 ईस्वी** में **विश्व विरासत स्थल** के रूप में मान्यता प्रदान की।

खजुराहो मंदिर से संबन्धित तथ्य :

- खजुराहो **हिन्दू एवं जैन मंदिरों का समूह** है, जो मध्य प्रदेश के **छतरपुर जिले** में स्थित है।
- **चौंसठ योगिनी मंदिर**, ब्रह्मा एवं महादेव मंदिर **ग्रेनाइट पत्थर** से बने हैं, जबकि शेष मंदिर **गुलाबी या हल्के पीले रंग के दानेदार बलुआ पत्थर** से निर्मित हैं।
- खजुराहो मंदिर **मध्य भारत की विंध्य पर्वतश्रेणी** में अवस्थित हैं।
- इन मंदिरों का निर्माण **चंदेल वंश के शासकों** द्वारा लगभग **900 से 1130 ईस्वी** के मध्य कराया गया।
- **1986 ईस्वी** में UNESCO ने इन्हें **विश्व विरासत स्थल** का दर्जा प्रदान किया।
- मंदिरों की **नींव ग्रेनाइट** की है, जो दिखाई नहीं देती, जबकि ऊपरी संरचना **बलुआ पत्थर** की है।
- ये मंदिर **नागर स्थापत्य शैली** और **कामुक मूर्तिकला** के लिए प्रसिद्ध हैं।

निष्कर्ष

*विश्व के इन दार्शनिकों ने हमें सिखाया कि शिक्षा केवल जानकारी का हस्तांतरण नहीं है। जहाँ **रूसो** हमें स्वतंत्रता सिखाते हैं, वहीं **डीवी** हमें समाज से जोड़ते हैं, और **फ्रेरे** हमें अन्याय के खिलाफ सोचना सिखाते हैं। इन सभी विचारों का संगम ही आज की आधुनिक 'समावेशी शिक्षा' का आधार है।*

मध्यकालीन भारत

अध्याय – I

अरबों का सिन्ध पर आक्रमण

- ***मध्ययुगीन भारत***, *"प्राचीन भारत" और "आधुनिक भारत" के बीच भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास की लम्बी अवधि को दर्शाता है।*
- *पाल राजा धर्मपाल, जो गोपाल के पुत्र थे, ने आठवीं शताब्दी ए.डी. से नौवीं शताब्दी ए.डी. के अंत तक शासन किया।*
- ***धर्मपाल द्वारा विक्रमशिला विश्वविद्यालय की स्थापना व नालन्दा विश्वविद्यालय का संरक्षण/पुनरुत्थान** किया **इसी अवधि में की गई।***
- ***भारत और अरब के बीच 7वीं सदी में ही सम्पर्क आरम्भ हो गये थे। लेकिन राजनीतिक संबंध 712 ई. में सिंध पर आक्रमण के दौरान स्थापित हुआ।***
- *गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट, चालुक्यों की प्रतिष्ठा की स्थापना उनके द्वारा अरबों का विरोध करने के कारण हुई। **अरबों का दीर्घकालिक महत्व यह था कि उन्होंने भारत में धर्म का प्रसार न करके धार्मिक सहिष्णुता का प्रदर्शन किया। हालांकि जजिया कर लिया जाता था।***
- ***अरबों का भारत पर पहला आक्रमण खलीफा उमर के काल में बम्बई के थाना पर हुआ जो कि असफल रहा।***
- ***अरबों का भारत का प्रथम सफल अभियान 712 ई. में मुहम्मद-बिन-कासिम के नेतृत्व में हुआ।***
- *मुहम्मद-बिन-कासिम ने दाहिर को हराकर 'सिन्ध' पर कब्जा कर लिया।*
- *कासिम ने 'मुल्तान' पर भी कब्जा कर लिया तथा इसका नाम सोने का शहर रखा।*
- *मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध में **जजिया कर** लागू किया, जो गैर-मुस्लिमों से लिया जाता था।*
- *अब्बासी खलीफाओं ने बगदाद (इराक) को अरब जगत की राजधानी घोषित किया।*
- *खलीफा हारून रशीद ने चरक संहिता का अरबी अनुवाद कराया।*
- *अरबों ने अंक, दशमलव तथा गणित के सिद्धांतों को सीखा।*

मुहम्मद बिन कासिम के प्रमुख अभियान

- *सिंध विजय के बाद जजिया लागू किया गया।"*
- *देबल के बाद कासिम ने नीरून, सेहवान पर सफल आक्रमण किया।*
- *सिसम जीतने के बाद कासिम ने राबर जीता। राबर में दाहिर लड़ता हुआ मारा गया। उसकी मृत्यु के बाद उसकी पत्नी रानीबाई ने अरबों के खिलाफ मोर्चा संभाला। परन्तु, स्वयं को हारते देखकर उसने जौहर कर लिया।*
- *अलोर या अरोर ब्राह्मणवाद के बाद दाहिर की राजधानी अलोर को जीता गया। **अरोर विजय ही सिन्ध विजय को पूर्णता प्रदान करता है ।***

- मुल्तान कासिम की अंतिम विजय थी। यहाँ से उसे इतना सारा सोना मिला की मुल्तान का नाम सोन का नगर (स्वर्ण नगर) रखा गया।
- सिन्ध विजय के पश्चात् कासिम ने ब्राह्मणों को ऊँचे पदों पर नियुक्त किया था।
- मुल्तान विजय के उपरान्त कासिम ने कन्नौज विजय हेतु अबु-हकीम के अधीन एक सेना भेजी। परन्तु, **अरब आक्रमणकारी सिन्ध के आगे नहीं बढ़ पायें क्योंकि कश्मीर के ललितादित्य ने इन्हें हराकर इनका प्रसार आगे की ओर रोक दिया।**
- **725 ई. में जब अरबों ने पुनः सिन्ध से आगे बढ़ने की कोशिश की तब गुर्जर-प्रतिहारों एवं बादामी के चालुक्यों ने उनको पराजित किया। यहीं कारण है कि अरब यात्री सुलेमान ने प्रतिहार शासक मिहिरभोज को अरब मुसलमानों का सबसे बड़ा शत्रु बताया**

महमूद गजनवी -

- भारत में तुर्कों का आक्रमण दो चरणों में सम्पन्न हुआ।
- प्रथम चरण का महमूद गजनवी तो दूसरे का मोहम्मद गौरी था।
- अरबों के बाद तुर्कों ने भारत पर आक्रमण किया। तुर्क चीन की उत्तरी-पश्चिमी सीमाओं पर निवास करने वाली असभ्य एवं बर्बर जाति थी।
- अलप्तगीन नामक एक तुर्क सरदार ने गजनी में स्वतन्त्र तुर्क राज्य की स्थापना की।
- अलप्तगीन के गुलाम तथा दामाद सुबुक्तगीन ने 977 ई. में गजनी पर अपना अधिकार कर लिया।
- महमूद गजनवी सुबुक्तगीन का पुत्र था।
- अपने पिता के काल में महमूद गजनवी खुरासान का शासक था।
- सुबुक्तगीन की मृत्यु के बाद उसका पुत्र एवं उत्तराधिकारी महमूद गजनवी गजनी की गद्दी पर 998 ई. में बैठा।
- 1010 ई. में महमूद ने नगरकोट को लूटा तथा 1010 ई. में तलवाड़ी युद्ध में हिन्दुओं के संघ को परास्त किया।
- 1014 ई. में थानेश्वर के चक्रस्वामी मंदिर को लूटा।
- 1015 ई. में कश्मीर में लोहको (लोहारिन) दुर्ग जीतने का असफल प्रयास किया। यह गजनवी की सेना की प्रथम पराजय थी जिसका मुख्य कारण प्रतिकूल मौसम था। इसके पश्चात उसने 1021 ई. में भी कश्मीर को जीतने का असफल प्रयत्न किया था।
- 1019 ई. में महमूद ने कालिंजर दुर्ग का घेरा डाला । क्योंकि, यहाँ के शासक विद्याधर चन्देल)इसे मुस्लिम लेखकों ने सर्वाधिक शक्तिशाली शासक बताया हैं (ने कन्नौज के नये शासक त्रिलोचनपाल एवं पंजाब के शाही शासक त्रिलोचनपाल के साथ मिलकर एक संघ का निर्माण किया था। इस संघ का प्रमुख विद्याधर था।
- महमूद गजनवी ने ग्वालियर)कालिंजर) के दुर्ग का घेरा डाला, लेकिन निर्णायक शक्ति परीक्षण न हो सका। विद्याधर ही वह चन्देल शासक था जो महमूद से पराजित नहीं हुआ और दोनों के बीच संधि हो गयी।
- 1025 ई. में गुजरात के सोमनाथ मंदिर पर महमूद का आक्रमण हुआ । समकालीन चालुक्य शासक भीम प्रथम था गजनवी के चले जाने के बाद इस मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।
- 1027 ई. में सिन्ध के जाटों को दण्ड देने हेतु वह भारत आया। 1030 ई. में महमूद गजनवी की मृत्यु हो गयी।

मुहम्मद गौरी

- मुहम्मद गौरी शंसबनी वंश का था। मुहम्मद गौरी का पूरा नाम शाहबुद्दीन मुहम्मद गौरी था। ग्यासुद्दीन मुहम्मद गौरी इसका बड़ा भाई था। ग्यासुद्दीन मुहम्मद गौरी ने 1163 ई. में गोर को राजधानी बनाकर स्वतंत्र राज्य स्थापित कराया।
- यहीं वह शाहबुद्दीन उर्फ मुईजुद्दीन मोहम्मद गौरी था जिसने 12वीं सदी में भारत पर आक्रमण किया। मोहम्मद गौरी ने सर्वदा अपने बड़े भाई ग्यासुद्दीन का सम्मान किया और एक स्वतंत्र शासक होते हुए भी स्वयं को उसके अधीन माना।
- 1203 ई. में ग्यासुद्दीन की मृत्यु केपश्चात् मोहम्मद गौरी ने एक स्वतंत्र शासक के रूप में मुइजुद्दीन की उपाधि धारण की तथा गोर को राजधानी बनाया ।
- 1205 ई. में मुहम्मद गौरी ख़्वारिज़्म के शासक से बुरी तरह पराजित हुआ। अफवाह यह थी कि गौरी युद्ध के मैदान में मारा गया था। इस खबर को सुनकर झेलम और चिनाब मध्यवर्ती क्षेत्र के खोखरिया ने विद्रोह कर दिया। इससे हालात बिगड़ गए। लेकिन गौरी ने हार नहीं मानी और कुतुबुद्दीन ऐबक की मदद से वह खोखरियाको का दमन करने में सफल रहा।
- मुहम्द बिन कासिम के बाद महमूद गजनवी तथा उसके बाद मुहम्मद गौरी ने भारत पर आक्रमण किया तथा कत्लेआम कर लूटपाट मचाई। भारत में तुर्क साम्राज्य का श्रेय मुहम्द गौरी को दिया जाता है।
- मुहम्मद गौरी गजनी तथा हेरात के मध्य स्थित एक छोटे से पहाड़ी क्षेत्र गजनी का शासक था।
- 12वीं शताब्दी के मध्य में गौरी वंश का उदय हुआ। गौरी वंश की नींव अलाउ-द्दीन जहांसोज ने रखी थी। जहांसोज की मृत्यु के बाद उसके पुत्र सैफ-उद-द्दीन गौरी के सिंहासन पर बैठा।
- गौरी साम्राज्य का आधार उत्तर-पश्चिम अफगानिस्तान था । प्रारंभ में गौरी गजनी के अधीन था।
- 1173 ई. में ग्यासुद्दीन ने अपने छोटे भाई मुहम्मद गौरी को गोर का क्षेत्र सौंप दिया तथा स्वंय गजनी पर अधिकार कर ख्वारिज्म के विरुद्ध संघर्ष शुरू कर दिया।
- मुहम्मद गौरी ने भारत की ओर प्रस्थान कर दिया । मुहम्द गौरी एक अफगान सेनापति था। यह एक महान विजेता था तथा सैन्य संचालक भी था।

प्रमुख आक्रमण और युद्ध (समीक्षा)

- ***गुजरात अभियान (1178 ई.):*** यह तथ्य सही है कि गौरी की भारत में पहली पराजय गुजरात में हुई थी।
  - ***सुधार:*** मूलराज द्वितीय (या भीम द्वितीय) की माता का नाम ***नायिका देवी*** था, जिन्होंने इस युद्ध का नेतृत्व किया था। वे मूलराज की माता (संरक्षिका) थीं, पत्नी नहीं। इसे ***'कायदरा का युद्ध'*** भी कहा जाता है।
- ***तबरहिंद (भटिंडा):*** यह तथ्य बिल्कुल सही है कि तबरहिंद पर अधिकार को लेकर ही पृथ्वीराज और गौरी के बीच विवाद शुरू हुआ, जो तराइन के युद्ध का कारण बना।
- ***तराइन का प्रथम युद्ध (1191 ई.):*** यह बिल्कुल सही है। पृथ्वीराज चौहान ने गौरी को हराया लेकिन उसे जीवित जाने दिया, जो बाद में एक रणनीतिक भूल साबित हुई।
- ***तराइन का द्वितीय युद्ध (1192 ई.):*** यह भारत के इतिहास का निर्णायक मोड़ था। यहाँ से भारत में मुस्लिम शासन की नींव पड़ी।

1. पृथ्वीराज चौहान की मृत्यु

आपने 'पृथ्वीराज रासो' (चंद्रबरदाई) का संदर्भ दिया है, जो एक महत्वपूर्ण साहित्यिक स्रोत है:

- ***साहित्यिक मत:*** चंद्रबरदाई के अनुसार 'शब्दभेदी बाण' वाली घटना सही है।
- ***ऐतिहासिक साक्ष्य:*** अधिकांश इतिहासकार (जैसे हसन निजामी) और उस समय के सिक्के यह संकेत देते हैं कि युद्ध के बाद पृथ्वीराज ने कुछ समय के लिए गौरी के अधीन अजमेर में शासन किया था, लेकिन बाद में विद्रोह के संदेह में उनकी हत्या कर दी गई।

2. सेनापति और अन्य अभियान

- ***बख्तियार खिलजी:*** इसने नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों को नष्ट किया था।
  - ***सुधार:*** आपने लिखा है कि 1206 में अलिमर्दान ने "मोहम्मद गौरी" की हत्या की। वास्तव में, अलिमर्दान खिलजी ने ***बख्तियार खिलजी*** की हत्या की थी, न कि गौरी की।
- ***कालिंजर विजय (1203 ई.):*** ऐबक ने चंदेल शासक परमर्दिदेव को हराकर कालिंजर जीता, यह तथ्य एकदम सही है।

3. गौरी की मृत्यु और सिक्के

- ***लक्ष्मी प्रकार के सिक्के:*** यह एक बहुत ही रोचक और सही तथ्य है। गौरी ने जो सिक्के चलाए उन पर एक ओर ***देवी लक्ष्मी*** की आकृति और दूसरी ओर देवनागरी लिपि में उसका नाम (श्री मुहम्मद बिन साम) अंकित था।
- ***गौरी की मृत्यु (1206 ई.):*** जब गौरी खोखरों को दबाकर वापस गजनी लौट रहा था, तब ***दम्यक*** (वर्तमान पाकिस्तान) नामक स्थान पर शाम की नमाज पढ़ते समय उसकी हत्या कर दी गई थी।

सारांश

- सर्वप्रथम देबल या दामोल पर ने जजिया कर लगाया।
- 1025 ई. में गुजरात के सोमनाथ मन्दिर पर महमूद का आक्रमण हुआ।
- 1191 ई. में तराइन के प्रथम युद्ध में "पृथ्वीराज तृतीय" ने गौरी को पराजित किया।
- 1192 ई. में तराइन के द्वितीय युद्ध में गौरी ने पृथ्वीराज तृतीय को बंदी बना लिया।
- कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1195 ई. में अन्हिलवाड़ा के शासक भीम द्वितीय पर आक्रमण किया । लेकिन ऐबक पराजित हुआ।
- भीम की मृत्यु के बाद गुजरात में सोलंकी वंश के स्थान पर बघेल वंश की की स्थापना हुई।

महत्त्वपूर्ण प्रश्न :-

प्रश्न-1. सोमनाथ के मन्दिर पर आक्रमण किसने किया था?

A. मोहम्मद-बिन-कासिम B. मोहम्मद गौरी
C. नादिर शाह D. महमूद गजनवी
उत्तर - D

प्रश्न-2. अलबरूनी का समकालीन था ?

A. महमूद गजनबी
B. मोहम्मद गौरी
C. अलाउद्दीन खिलजी
D. मोहम्मद बिन तुगलक
उत्तर – A

प्रश्न-3. भारत का प्रथम मुस्लिम शासक कौन था ?

A. महमूद गजनी
B. मोहम्मद गौरी
C. बाबर
D. मोहम्मद -बिन- तुगलक
उत्तर - B

प्रश्न-4. गुजरात के सोमनाथ मंदिर पर 1025 ई. में किसने आक्रमण किया था ?

A. मुहम्मद गौरी
B. महमूद गजनबी
C. बाबर
D. मोहम्मद बिन तुगलक
उत्तर - B

प्रश्न-5. भारत में तुर्क साम्राज्य का श्रेय किसे दिया जाता है?

A. मुहम्मद गौरी B. बाबर
C. महमूद गजनबी D. हुमायूँ उत्तर - A

अकबर की स्थापत्य कला(1556–1605)

- मुगल स्थापत्य कला का वास्तविक विकास अकबर के शासनकाल में प्रारम्भ हुआ। अकबर ने **भारतीय (विशेषकर राजपूत) और ईरानी शैली** का समन्वय करके एक नई "मुगल शैली" विकसित की।
- उसकी इमारतों में मुख्यतः लाल बलुआ पत्थर का उपयोग हुआ तथा सजावट के लिए संगमरमर, नक्काशी और जाली कार्य किया गया।

1. आगरा क्षेत्र की इमारतें

- **आगरा का लाल किला** — अकबर की सबसे महत्वपूर्ण कृति; सैन्य और राजकीय उपयोग का केंद्र
- **जहाँगीरी महल** — राजपूत शैली से प्रभावित महल
- **अकबरी महल** — शाही आवासीय परिसर

2. अन्य किले

- **लाहौर किला** — उत्तर-पश्चिमी सीमा की सुरक्षा हेतु
- **इलाहाबाद किला** — गंगा-यमुना संगम पर सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण

3. फतेहपुर सीकरी (अकबर की राजधानी)

अकबर की स्थापत्य प्रतिभा का सर्वोत्तम उदाहरण **फतेहपुर सीकरी** है। यहाँ की प्रमुख इमारतें:

- **दीवान-ए-आम** — जनता से मिलने का स्थान
- **दीवान-ए-खास** — मंत्रणा कक्ष
- **जोधाबाई का महल (रानीवास)** — हिन्दू वास्तु प्रभाव
- **बीरबल का महल** — अलंकरणयुक्त आवासीय भवन
- **पंचमहल** — बहुमंज़िला मंडप, हिन्दू-मुस्लिम शैली का सुंदर मिश्रण
- **जामा मस्जिद** — धार्मिक भवनों में प्रमुख
- **बुलंद दरवाजा** — गुजरात विजय की स्मृति में निर्मित विशाल प्रवेश द्वार
- **शेख सलीम चिश्ती का मकबरा** — संगमरमर जाली कार्य का उत्कृष्ट उदाहरण

4. सिकन्दरा (अकबर का मकबरा)

- स्थान — आगरा
- निर्माण आरम्भ — अकबर के समय
- पूर्ण — जहाँगीर के शासनकाल में
- बहुस्तरीय पिरामिडनुमा संरचना, मुगल मकबरा शैली का महत्वपूर्ण विकास

स्थापत्य विशेषताएँ

- लाल बलुआ पत्थर का व्यापक उपयोग
- जाली, नक्काशी और स्तम्भयुक्त मंडप
- राजपूत महलों जैसी छतरियाँ और झरोखे
- ईरानी मेहराब और गुम्बद

नोट-

- बाबर → उद्यान परम्परा
- हुमायूँ → उद्यान-मकबरा परम्परा
- **अकबर → वास्तविक मुगल स्थापत्य का प्रारम्भ और विकास**

(5) जहाँगीर की स्थापत्य कला -

जहाँगीर को चित्रकला से ही अधिक लगाव था, वास्तुकला से नहीं । उसके समय की दो इमारतें प्रमुख हैं ।

(i) **एत्मादुद्दौला का मकबरा -** यह मकबरा नूरजहाँ ने अपने पिता की याद में 1626 ई. में बनवाया था। यह आगरा में स्थित है और सफेद संगमरमर का बना है।इसे अक्सर **"ताजमहल का पूर्वरूप"** कहा जाता है।

(ii) **जहाँगीर का मकबरा -** इसका निर्माण भी नूरजहाँ द्वारा करवाया गया था। यह लाहौर के निकट रावी नदी के किनारे शाहदरा में स्थित है। समाधि पर संगमरमर की पच्चीकारी की गई है।

(6) शाहजहाँ की स्थापत्य कला -

भवन निर्माण की दृष्टि से शाहजहाँ का काल मुग़ल काल का स्वर्ण युग था। उसके द्वारा बनवाई गई इमारतों में मौलिकता, सुन्दरता और कोमलता है। इन भवनों में नक्काशी व चित्रकारी विशेष है। शाहजहाँ के काल में निम्नलिखित इमारतों का निर्माण हुआ ।

(i) **आगरा के किले में निर्मित इमारतें -** शाहजहाँ ने अकबर द्वारा लाल किले में लाल पत्थर से बनवाई गई इमारतों को तुड़वाकर उन्हें संगमरमर से बनवाया। ये इमारतें हैं– दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, मच्छी भवन, शीश महल तथा खास महल, झरोखा दर्शन और मुसम्मन बुर्ज, नगीना और मोती मस्जिद ।

(ii) **ताजमहल - शाहजहाँ द्वारा बनवाई गई सर्वश्रेष्ठ इमारत आगरा का ताजमहल है,** जिसे उसने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की याद में बनवाया था। इसकी गणना **विश्व के सात आश्चर्यों (अजूबों) में की जाती है। यह लगभग 20 -22 वर्षों में बनकर तैयार हुआ। यह इमारत फारसी ढंग से बनी हुई है, फिर भी बहुत-सी शिल्पकला हिन्दू ढंग की है।**

(iii) दिल्ली का लालकिला -

- शाहजहाँ ने **1638–1648 ई.**में यमुना नदी के किनारे एक विशाल किले का निर्माण करवाया। इसमें दो दरवाजे हैं। **इसमें दीवान-ए-खास, दीवान-ए-आम और रंगमहल बहुत सुन्दर हैं।**
- दीवान-ए-खास की दीवार पर लिखा है, "अगर फिरदौस बरसरा जमीनस्त हमीनस्त, हमीनस्त, हमीनस्त" अर्थात् धरती पर यदि कहीं स्वर्ग है, तो यहीं है, यहीं है, यहीं है।

(iv) दिल्ली की जामा मस्जिद - शाहजहाँ ने दिल्ली में लालकिले के निकट जामा मस्जिद बनवाई। यह लाल पत्थर की बनी हुई है।

(v) तख्त-ए-ताऊस (मयूर सिंहासन)- शाहजहाँ ने मयूर की शक्ल का एक सिंहासन बनवाया था।

(7) औरंगजेब की स्थापत्य कला –

- दिल्ली की जिस एकमात्र इमारत से औरंगजेब का नाम सम्बन्धित है, वह है लालकिले में स्थित सफेद संगमरमर की मस्जिद । यह मकबरा **औरंगज़ेब के पुत्र आज़म शाह** ने अपनी माँ **रबिया-उद्-दौरानी** की याद में बनवाया।यह औरंगाबाद में स्थित है ।**यह द्वितीय ताजमहल के नाम से प्रसिद्ध है।**
- ताज की नकल होते हुए भी यह डिजायन, कारीगरी और रचना में उससे कहीं भिन्न है। औरंगजेब द्वारा बनवाई गई लाहौर की बादशाही मस्जिद तथा बनारस एवं मथुरा की मस्जिदें भी उल्लेखनीय हैं।

दक्षिण भारतीय मध्य-कालीन स्थापत्य कला

- दक्षिण भारत में अलाउद्दीन खिलजी और फिर मुहम्मद बिन तुगलक की सेनाओं ने आक्रमण किया। मुहम्मद बिन तुगलक की अयोग्यताओं के कारण दक्षिण भारत स्वतंत्र हो गया और बहमनी और विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई।

बहमनी साम्राज्य और दक्षिण भारतीय मुस्लिम सल्तनत

- बहमनी साम्राज्य की स्थापना 1347 में हुई।
- **बहमनी साम्राज्य के समय गुलबर्गा के किले का निर्माण हुआ। इसकी मस्जिद स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है।** इसके अलावा, बहमनी साम्राज्य में कई मकबरों का निर्माण हुआ।
- कालांतर में बहमनी साम्राज्य टूटकर पाँच सल्तनतों में बंट गया- अहमदनगर, बीजापुर, बरार, बीदर, गोलकुंडा । यह सभी अपनी अपनी स्थापत्य कला के लिए जाने जाते हैं।
- बरार सल्तनत के शासक फ़थुल्लाह इमाद- उल मुल्क द्वारा गाविलगढ़ किला बनवाया गया। **गोलकुंडा में कुतुबशाही सल्तनत के मकबरे स्थित हैं।**
- **हैदराबाद स्थित चारमीनार का निर्माण 1591 में मुहम्मद कुली कुतुबशाह ने कराया।** यह **चार मीनारों वाला स्मारक** है गोलकुंडा की स्थापत्य कला के अन्य उदाहरण मक्का मस्जिद, खैरताबाद मस्जिद खेरुन्नीसा (बेगम) द्वारा बनवाई गयी (, हयात बक्शी मस्जिद, तारामती बरादरी, टोली मस्जिद इत्यादि हैं।
- बीजापुर के आदिलशाही सल्तनत में भी स्थापत्य कला का बहुत विकास हुआ । इसमें **मुहम्मद अदिल शाह का मकबरा सर्वाधिक प्रमुख है, इसे बनाने में 30 वर्ष लगे थे। इस मकबरे को गोल गुंबज कहा जाता है।**

प्रश्न - सुमेलित कीजिए

वास्तु शैली	संबंधित राजवंश
A. मेहराब की निचली सतह पर कमलकलि की झालर	(i) शर्की
B. अष्टभुजीय मकबरों का उदय	(ii) विजयनगर
C. स्तंभों में बोदिगोई का प्रयोग	(iii) खिलजी
D. झुकी हुई दीवारों के साथ विशाल मुख्य द्वार	(iv) तुगलक

कूट :-	a	b	c	d
A.	(iii)	(i)	(iv)	(ii)
B.	(ii)	(i)	(iv)	(iii)
C.	(i)	(ii)	(iv)	(iii)
D.	(iii)	(iv)	(ii)	(i)

उत्तर – D

मध्यकालीन हिन्दू मंदिर

- मध्यकालीन भारत में कई हिन्दू मंदिरों का भी निर्माण कराया गया था। इसमें से **सबसे प्रमुख मीनाक्षी मंदिर मदुरई में स्थित है।** इसे मीनाक्षी सुंदरेश्वर मंदिर कहा गया है। यहाँ एक पुराना मंदिर था जिसे मलिक काफ़ूर ने नष्ट कर दिया था।
- इसका पुनर्निर्माण 16वीं -17वीं सदी में नायक राजा विश्वनाथ नायक ने कराया। यह शिव के रूप सुंदरेश्वर और पार्वती के रूप मीनाक्षी को समर्पित है।
- श्रीरंगनाथ स्वामी मंदिर - यह तमिलनाडु के तुरुचिरपल्ली में स्थित है। यह भारत का सबसे बड़ा मंदिर है। यहाँ के पुराने मंदिर को भी अलाउद्दीन खिलजी के सेनापति मलिक काफ़ूर ने नष्ट कर दिया था।
- पद्मनाभ स्वामी मंदिर यह - तिरुवनंतपुरम में स्थित है।

राजस्थानी स्थापत्य कला

सल्तनत काल और मुग़ल काल में भी राजस्थान में अनेक भव्य किलों, मंदिरों का निर्माण हुआ। कुछ महत्वपूर्ण उदाहरण इस प्रकार से हैं :-

जैसलमेर किला

- इसे **राजपूत राजा रावल जैसल ने 1155 ई. में बनवाया।** यह 1500 फुट लम्बा जबकि 750 फुट चौड़ा किला है। आज भी इसमें जैसलमेर के लोग रहते हैं। यह **विश्व के गिने चुने लिविंग फोर्टस में से एक है।** इसमें 7 जैन मंदिर, लक्ष्मीनाथ मंदिर प्रमुख हैं ।

चित्तौड़गढ़ किला

- चित्तौड़गढ़ किले का इतिहास 7वीं सदी से शुरू होता है। इस किले पर कई बार आक्रमण हुए- अलाउद्दीन खिलजी का आक्रमण (1303), बहादुरशाह का आक्रमण (1535), अकबर का चित्तौड़ का घेरा (1567-68)।
- इस किले में कई मंदिर हैं। **इसमें राणा कुंभा द्वारा बनवाया गया विजय स्तम्भ है,** जो उन्होंने मालवा के सुल्तान मुहम्मद खिलजी पर विजय के प्रतीक के रूप में बनवाया। कीर्ति स्तम्भ और महारानी पद्मिनी का महल भी यहीं पर है।

कुंभलगढ़ किला

- कुंभलगढ़ किला **राणा कुंभा द्वारा बनवाया गया।** यह राजस्थान के राजसमन्द जिले में स्थित है। यह **यूनेस्को की विश्व धरोहरों में है।** यहीं पर महाराणा प्रताप का जन्म स्थान है।

आमेर किला

- यह जयपुर में स्थित है। इसे रा**जा मानसिंह ने बनवाया था।** इसका निर्माण 1592 में हुआ। यह भी **यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों में से एक** है।

हवामहल

- हवामहल जयपुर मे स्थित है। **इसका निर्माण सवाई प्रतापसिंह द्वारा 1799 ई. में करवाया गया था ।** इसके सामने का भाग पिरामिडय आकृति की चौड़ी पाँच मंजिली दीवार के रूप में है ।

❖ **चित्रकला एवं संगीत का विकास**

मुग़ल काल में कला, चित्रकला एवं संगीत

- भारत में चित्रकला का विकास हुमायूँ के शासन-काल में प्रारंभ हुआ। ये चित्रकार मीर सैयद अली सिराजी और ख्वाजा अब्दुल समद तबरिजी थे।
- सिराजी एवं तबरिजी का निर्णायक रूप से पड़ा भारतीय चित्रकार अधिकतर धार्मिक एंव (जैन पांडुलिपि, लोक, दरबारी दृश्य भी बनते थे) विषयों का चित्रण करते थे। जबकि इरानी चित्रकारों ने राजदरबारों के जीवन, युद्ध के दृश्य आदि का चित्रण किया। सल्तनत काल से ही भारत में कागज का प्रयोग लोकप्रिय होने लगा था।

अकबर के समय चित्रकला -

- मीर सैयद अली और ख्वाजा अब्दुस समद अकबर के दरबार में थे। **अबुल फजल के अनुसार अकबर ने उन्हें सीरीन-ए-कलम की उपाधि दी ।**

  अकबर के समय सबसे बड़ी योजना हम्जानामा का चित्रण 1562 ई. में प्रारंभ हुआ । इसे ही दास्तान-ए-अमीर-हम्जा कहा जाता है।
- अबुल फजल, बदायूंनी और शाहनवाज खाँ का मानना है कि इसके चित्रण का कार्य अकबर की प्रेरणा से प्रारंभ हुआ और सबसे पहले मीर सैयद अली के मार्ग निर्देशन में यह प्रारंभ हुआ। फिर इसे ख्वाजा अब्दुस समद के निर्देशन में पूरा किया गया।
- अबुल फजल के अनुसार **अकबर के तस्वीरखाना में अनेक कलाकार थे,** परंतु वास्तविक संख्या अधिक भी हो सकती है। इनमें हिन्दुओं की संख्या अधिक थी।
- इस काल में चित्रकारी सामूहिक प्रयास था। एक से अधिक कलाकार मिलकर किसी चित्र का निर्माण करते थे। कलाकार नकद वेतन प्राप्त कर्मचारी थे।
- **अकबर के समय चित्रकला के मुख्य रूप से मुख्य विषय थे- 1. दरबार की प्रतिदिन की घटनाओं का चित्रण 2. छवि चित्रण।**
- अकबर के समय में ही मुग़ल चित्रकला पर भारतीय प्रभाव गहरा हो गया। 1562 ई. में जब मुग़ल दरबार में तानसेन के आगमन का प्रसिद्ध चित्र बनाया गया, हिन्दू एवं फारसी पद्धति का सहयोग दिखने लगा।
- फतेहपुर सीकरी के दीवारों पर हिन्दू एवं मुसलमान दोनों कलाकारों के संयुक्त परिश्रम से चित्रकारी की गयी। अकबर के दरबार में अब्दुस समद, फरुख बेग, खुसरो कुली एवं जमशेद विदेशी कलाकार थे।
- अकबर कहा करता था कि मुझे प्रतीत होता है कि मानों चित्रकार को ईश्वर को पहचानने का एकदम विचित्र साधन होता है।
- **अकबर के समय दसबत अपने समय का पहला अग्रणी चित्रकार था।** वह एक कहार् का बेटा था। **उसने रज्मनामा का चित्रण किया।** बाद में वह विक्षिप्त हो गया और 1584 ई. में उसने आत्महत्या कर ली। **मुहम्मद शरीफ़** अब्दुस्समद का पुत्र नहीं, बल्कि चित्रशाला से जुड़ा अधिकारी/पर्यवेक्षक माना जाता है
- **अकबर के समय कुछ महत्त्वपूर्ण कृतियों की पांडुलिपि तैयार की गयी जो निम्नलिखित है। रामायण,अकबरनामा, अनवर-ए-सुहैली,बाबरनामा, खम्सा, तारीख-ए-अल्फी, कालियादमन ।** इस काल में विशेष कर **राजपूती चित्रकला ने मुग़ल चित्रशैली को प्रभावित किया।**
- **इसकी विशेषता चौड़े ब्रश की जगह गोल ब्रश का प्रयोग थी।** इसके साथ गहरे नीले रंग एवं गहरे लाल रंग का अधिक प्रयोग होने लगा। अकबर के शासनकाल में यूरोपीय चित्रकला का प्रभाव भी मुग़ल चित्रकला शैली पर पड़ा था।
- यूरोपीय चित्रकला के कुछ नमूने पुर्तगालियों के माध्यम से अकबर के दरबार में पहुँचे। इससे मुग़ल चित्रकारों ने दो विशेषताएँ ग्रहण कीं- 1. व्यक्ति विशेष का चित्रण 2. दूर की वस्तुएँ छोटी और पास की वस्तुएँ बड़ी बनाना

प्रश्न - 16 वीं शताब्दी में संपन्न महाभारत का फारसी अनुवाद कहलाता है-

A. हमजानामा **B. आलमगीरनामा**

B. बादशाहनामा **D. रज्मनामा**

उत्तर – D

सलीम– शहजादा सलीम ने आगा रेजा नामक एक हेराती प्रवासी चित्रकार के नेतृत्व में आगरा में एक चित्रणशाला प्रारंभ की।

जहाँगीर – जहाँगीर का शासनकाल मुग़ल चित्रकला के चर्मोत्कर्ष का युग था। जहाँगीर के काल में चित्रकला की दो महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ थीं-

1. मोरक्का के रूप में **2.** डेकोरेटेड मार्जिन।

- **जहाँगीर के समय छवि-चित्रण की तुलना में पांडुलिपि के चित्रण का महत्त्व कम हो गया।** जहाँगीर की चित्रकला में दो नए तत्व जुड़ गए-

1. **इसकी चित्रकला शैली में रूपवादी शैली की प्रधानता है।**

उत्तर - D

प्रश्न-9. सूफी अनुयायियों को कहा जाता था?

A. मुरीद B. पीर

C. वारिस D. शेख

उत्तर - A

प्रश्न-10. मध्यकालीन भक्ति आंदोलन का उद्भव कहाँ और किसके द्वारा हुआ?

A. उत्तर भारत के संतो द्वारा

B. दक्षिण भारत के आलवार संतो के द्वारा

C. पश्चिमी भारत में लोक देवताओं के द्वारा

D. इनमें से कोई नहीं

उत्तर – B

आधुनिक भारत का इतिहास

अध्याय – 1

आधुनिक भारत का विकास

- **यूरोपीय कम्पनियों का आगमन**

भारत में आने वाली यूरोपीय कम्पनियों का क्रम

पुर्तगाली→डच→ब्रिटिश→डेनिश→फ्रांसीसी→स्वीडस

वास्कोडिगामा

- यूरोपीय शक्तियों में पुर्तगाली कम्पनी ने भारत में सबसे पहले प्रवेश किया। **भारत में आने के लिए इन्होंने नये समुद्री मार्ग की खोज की।** पुर्तगाली व्यापारी वास्कोडिगामा ने 17 मई 1498 में भारत के पश्चिमी तट पर अवस्थित बंदरगाह कालीकट पहुँचकर की। बन्दरगाह पर कथडाबू नामक स्थान पर पहुँचा।
- वास्कोडिगामा का स्वागत कालीकट के शासक जमोरिन ने किया। **पुर्तगालियों के भारत आगमन से भारत एवं यूरोप के मध्य व्यापार के क्षेत्र में एक नये युग का सूत्रपात हुआ।**
- भारत आने और जाने में हुए यात्रा व्यय के बदले में उसने 60 गुना अधिक धन कमाया। धीरे – धीरे अन्य पुर्तगाली व्यापारी भारत में आने लगे भारत में कालीकट, गोवा, दमन दीव और हुगली के बन्दरगाहों पर पुर्तगालियों ने अपनी व्यापारिक कोठियां स्थापित की

नोट :- पेट्रो अब्रेज केब्रोल भारत पहुँचने वाला दूसरा पुर्तगाली था।

1502 ई. में वास्कोडिगामा पुनः भारत आया था।

- पुर्तगाली :- **1503 में पुर्तगालियों ने अपनी पहली फैक्ट्री कोचीन में स्थापित की थी।**
- दूसरी फैक्ट्री की स्थापना 1505 ई. में कन्नूर में की गई।

फ्रांसिस्को डी. अल्मेडा [1505 - 1509]

- **यह भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर / वायसराय बनकर आया था।** इसने 1509 ई. में दीव के समुद्री युद्ध में पुर्तगालियों ने मिस्र, तुर्की और गुजरात की संयुक्त नौसेना को पराजित किया।इसे पुर्तगाली सरकार ने आदेश दिया था कि यह भारत में ऐसे दुर्ग का निर्माण करे जिनका उद्देश्य बस केवल सुरक्षा न होकर हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगाली नियंत्रण स्थापित करना भी हो **(उसके द्वारा अपनाई नीति नीली जल की नीति कहलाई)**
- **यह पॉलिसी हिन्द महासागर के व्यापार पर पुर्तगीज नियंत्रण स्थापित करने के लिए अल्मेडा ने शुरु की थी।**
- पुर्तगाल की राजधानी –लिसबन

अध्याय – 2

राष्ट्रवाद का उदय

❖ **1857 की क्रांति से पूर्व के विद्रोह**

राजनीतिक – धार्मिक आंदोलन

फकीर विद्रोह (1776-77)

- **यह विद्रोह बंगाल में विचरणशील मुसलमान धार्मिक फकीरों द्वारा किया गया था।** इस विद्रोह के नेता मजनू शाह ने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती देते हुए जमीदारों और किसानों से धन इक्कठा करना आरम्भ कर दिया।
- मजनू शाह की मृत्यु के बाद चिराग अली शाह ने आंदोलन को नेतृत्व प्रदान किया। पठानों राजपूतों और सेना से निकाले गये भारतीय सैनिकों ने उनकि मदद की।
- **देवी चौधरानी और भवानी पाठक इस आंदोलन से जुड़े प्रसिद्ध हिन्दू नेता थे।**

सन्यासी विद्रोह (1770 – 1820)

- **संन्यासी विद्रोह भारत की आज़ादी के लिए बंगाल में अंग्रेज़ हुकूमत के विरुद्ध किया गया।** एक प्रबल विद्रोह था। संन्यासियों में अधिकांश शंकराचार्य के अनुयायी थे।
- **इतिहास प्रसिद्ध इस विद्रोह की स्पष्ट जानकारी बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास 'आनन्दमठ' में मिलती है।**
- बंगाल में अंग्रेज़ी हुकूमत के क़ायम होने पर जमींदार, कृषक, शिल्पकार सभी की स्थिति बद्‌त्तर हो गई थी।
- इसके अलावा बंगाल का 1770 ई. का भयानक अकाल तथा अंग्रेज़ी सरकार द्वारा इसके प्रति बरती गई उदासीनता इस विद्रोह का प्रमुख कारण थी।
- भारतीय जनता के तीर्थ स्थानों पर जाने पर लगे प्रतिबन्ध ने शान्त संन्यासियों को भी विद्रोह पर उतारू कर दिया। इन सभी तत्वों (जमींदार, कृषक, शिल्पी व संन्यासियों) ने मिलकर अंग्रेज़ी सरकार का विरोध किया।
- इस विद्रोह को कुचलने के लिए वारेन हेस्टिंग्स को कठोर कार्रवाई करनी पड़ी थी।

पागलपंथी विद्रोह

- उत्तर-पूर्वी भारत में प्रभावी **पागलपंथी एक धार्मिक पंथ था। उत्तर-पर्वी क्षेत्र में हिन्दू मुसलमान और गारो तथा जांग आदिवासी इस पंथ के समर्थक थे।**
- इस क्षेत्र में अंग्रेजों द्वारा क्रियान्वित भू-राजस्व तथा प्रशासनिक व्यवस्था के कारण व्यापक असंतोष था।
- इसके परिणामस्वरूप **1825 ई. में पागलपंथियों के नेता टीपू ने विद्रोह कर दिया।** यह विद्रोह लगभग दो दशकों तक चला। इस विद्रोह के दौरान टीपू इतना प्रभावशाली हो गया की उसने उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में औपनिवेशक प्रशासन के समान्तर एक ओर प्रशासनिक तंत्र का गठन कर लिया। इस विद्रोह को 1833 ई. में दबा दिया गया।

वहाबी आंदोलन (1830 – 70)

- वहाबी आंदोलन **मूलतः एक इस्लामिक सुधारवादी आंदोलन था।** जिसने **कालांतर में मुस्लिम समाज में व्याप्त अन्धविश्वास एवं कुरुतियों के उन्मूलन को अपना उद्देश्य बनाया।**
- इस आंदोलन के संस्थापक अब्दुल वहाबी के नाम पर इसका नाम वहाबी आंदोलन पड़ा।
- सैयद अहमद बरेलवी ने भारत में इस आंदोलन को प्रेरणा प्रदान की। इस आंदोलन के तहत सैयद अहमद ने सन 1830 में पेशावर पर नियंत्रण कर लिया और अपने नाम के सिक्के चलवाए। किन्तु 1831 में बालाकोट के युद्ध में इनकी मृत्यु हो गई।
- सैयद अहमद की अचानक मृत्यु के बाद वहाबी आंदोलन का मुख्य केन्द्र पटना हो गया इस आंदोलन की अनेक कमजोरियां थी जैसे साम्प्रदायिक उन्माद तथा धर्मांधता इसके बावजूद वहाबीयों ने हिन्दुओं का विरोध कभी नहीं किया।
- वहाबी आंदोलन भारत को अंग्रजों से मुक्त करना चाहता था। परन्तु **इस आंदोलन का उद्देश्य भारत के लिए स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं बल्कि मुस्लिम शासन की पुनस्थापना करना था।** 1870 के आस-पास अंग्रेजों ने इस आंदोलन का दमन कर दिया।

कूका विद्रोह

- कूका विद्रोह की शुरुआत पंजाब में 1860-1870 ई. में हुई थी। वहाबी विद्रोह की भाँति 'कूका विद्रोह' का भी आरम्भिक स्वरूप धार्मिक था, किन्तु बाद में यह राजनीतिक विद्रोह के रूप में परिवर्तित हो गया।
- इसका सामान्य उद्देश्य अंग्रेज़ों को देश से बाहर निकालना था।
- **पश्चिमी पंजाब में 'कूका विद्रोह' की शुरुआत लगभग 1840 ई. में 'भगत जवाहर मल' द्वारा की गयी थी। भगत जवाहर मल को 'सियान साहब' के नाम से भी जाना जाता था।**
- प्रारम्भ में इस विद्रोह का उद्देश्य सिक्ख धर्म में प्रचलित बुराईयों को दूर कर इसे शुद्ध करना था।
- सियान साहब ने अपने शिष्य 'बालक सिंह' के साथ मिलकर अपने अनुयायियों का एक दल गठित किया।
- इस दल का मुख्यालय 'हजारा' में हुआ करता था। **इस विद्रोह के विरुद्ध अपनी दमनकारियों नीतियों को अपनाते हुये अंग्रेज़ों ने 1872 ई. में इसके एक नेता 'रामसिंह' को रंगून निर्वासित कर दिया** और आंदोलन पर नियन्त्रण पा लिया गया।

अपदस्थ शासकों के आंदोलन

वेलुपंथी का विद्रोह :-

- **वेलुपंथी त्रावणकोर केरल का दीवान था।** पद से हटाये जाने और राज्य पर भारी वित्तीय बोझ डाले जाने के खिलाफ उसने विद्रोह कर दिया।

- अंग्रेजों से लड़ाई में वेलूपंथी घायल हो गया और जंगल की तरफ भाग गया जहाँ उसकी मृत्यु हो गई । **मरने के बाद अंग्रेजी सेना ने उसे सार्वजनिक रूप से फांसी पर लटका दिया।**

विशाखापट्नम का विद्रोह (1827 – 30)

- विशाखापट्नम जिले में अपनी सम्पति जब्त कर लिए जाने तथा लगान का भुगतान ना किये जाने के कारण सरकार द्वारा कठोर तरीके अपनाये जाने के विरोध में स्थानीय जमीदारों ने सन् 1827- 30 के बीच अनेक विद्रोह किये कालांतर में सरकार ने इन सभी विद्रोह को दबा दिया ।

अपदस्त शासकों के आश्रितों का विद्रोह

समोसी विद्रोह

- समोसी मराठा राज्य के अधीनस्थ कर्मचारी थे जिन्होंने मराठा राज्य के पतन के उपरांत कृषि को रोजगार के रूप में अपना लिया ।
- अत्यधिक लगान वसूली के कारण 1822 में उन्होंने विद्रोह कर दिया ।
- इसी बीच सन् 1825 -26 में अकाल पड़ने के कारण उमा जी के नेतृत्व में उन्होंने पुनः विद्रोह किया ब्रिटिश सरकार ने उनके अपराधों को माफ़ कर दिया तथा भूमि अनुदान देने के साथ-साथ उन्हें पर्वतीय पुलिस में भर्ती किया ।

गडकरी विद्रोह

- गडकरी विद्रोह अंग्रेज़ों के ख़िलाफ किया गया था। **1844 ई. में महाराष्ट्र में 'गड़करी जाति' के विस्थापित सैनिकों ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध इस विद्रोह को अंजाम दिया।**
- गडकरियों ने 'सनमगढ़' तथा 'भूदरगढ़' के क़िलों को जीत लिया था। बाद के दिनों में अंग्रेज़ों ने इस विद्रोह को कुचल दिया, और क़िलों को फिर से प्राप्त कर लिया।

सावन्तवादी विद्रोह

प्रवासीवादी विद्रोह: प्रवासीवादी विद्रोह भारतीयों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ शुरू किया गया था।

- प्रवासीवादी विद्रोह 1844 में हुआ था।
- प्रवासीवादी विद्रोह का नेतृत्व मराठा सरदार फोन्ड सावन्त ने किया था।
- सावंत के कुछ सरोकारों और देसिटीज़ की सहायता से देंक के कुछ किलों पर अधिकार कर लिया गया।
- बाद में अंग्रेजी सेना ने मुठभेड़ में विद्रोहियों को राष्ट्रस्त कर दिया।
- कई विद्रोही तो भाग गए और कुछ पकड़े गए विद्रोहियों पर देशद्रोह का मुकदमा चला गया।
- अंग्रेज सरकार प्रवासीवादी विद्रोह का दमन करने में कामयाब रही।

ब्रिटिश भारत में जनजातीय आंदोलन

- ब्रिटिश शासन की स्थापना के बाद लागू की गई भू-राजस्व तथा प्रशासनिक व्यवस्था ने कालीबाई तथा विभिन्न विशिष्ट सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाओं को औपनिवेशक व्यवस्था में शामिल कर लिया ।
- इस नई व्यवस्था ने आदिवासीयों के शोषण का एक नया तंत्र स्थापित कर दिया जिसके कारण इन जनजातियों में जबरदस्त असंतोष फैला ।
- **औपनिवेशक अर्थव्यस्था ने अपने हित के उन्नयन के लिए जमीदारों तथा बिचोलिये वर्ग को बढ़ावा दिया ।**
- **इस वर्ग ने आदिवासियों को कर के जटिल ढाचें में उलझाकर उन्हें उनकी ही भूमि से बेदखल कर दिया ।** इससे वे औपनिवेशक शोषण के अंतहीन जाल में फँस गए।

जनजातीय आंदोलन का स्वरूप

- सभी जनजातीय अथवा आदिवासी आंदोलनों की प्रष्ठ भूमि एकसमान थी । किन्तु इन आं**दोलनों के समय तथा इनके द्वारा उठाये मुद्दों में पर्याप्त भिन्नता थी ।**
- कुँवर सुरेश सिंह ने इन आंदोलनों को तीन चरणों में विभाजित किया है।
- **प्रथम चरण -** 1795 से 1820 के बीच था । इस समय **अंग्रेजी शासन व्यवस्था युवावस्था की और बढ़ रही थी।**
- **दूसरा चरण –** दूसरा चरण 1860 से 1920 तक रहा । इस चरण के दौरान **आदिवासी आंदोलनों की प्रवृत्ति अलगाववादी आंदोलनों की बजाय राष्ट्रवादी तथा कृषक आंदोलनों में भाग लेने की रही ।** इसके अलावा दोनों चरणों में भिन्नता रही थी ।

मुंडा एवं हो विद्रोह (1820-22)

- यह छोटा नागपुर एवं सिंह भूमि जिला से अंग्रेजों द्वारा मुंडा एवं हो जनजातियों को उनकी भूमि से बेदखल किए जाने से इस विद्रोह की नींव पड़ी हो जनजाति ने 1820 22 ईस्वी तक और 1831 ईस्वी में अंग्रेजी सेना का विद्रोह किया ।
- राजा जगन्नाथ जो बंगाल के पाराहार के तत्कालीन राजा थे, उन्होंने आदिवासियों की इस विद्रोह में भरपूर सहायता की मेजर रफ सेज कठोर कार्यवाही से इस विद्रोह का दमन कर दिया 18 से 74 में मुंडा विद्रोह शुरू हुआ, तथा 18 से 95 ईस्वी में बिरसा मुंडा द्वारा इस विद्रोह का नेतृत्व संभालने पर यह विद्रोह शक्तिशाली रूप से सामने आया ।
- इन्होंने 18 से 99 ईस्वी. में क्रिसमस की पूर्व संध्या पर इस विद्रोह की उद्घोषणा की जो सन् उन्नीस सौ में पूरे मुंडा क्षेत्र में आग की तरह फैल गया । सन् उन्नीस सौ में अंग्रेजों द्वारा बिरसा मुंडा को गिरफ्तार कर लिया । जहां राँची की जेल में हैजे से बिरसा मुंडा की मृत्यु हो गई।

कोल विद्रोह (1831)

- 1831 में छोटा नागपुर में यह कोल विद्रोह हुआ **इस विद्रोह का प्रमुख कारण कोल आदिवासियों की जमीन छीनकर मुस्लिम और सिख संप्रदाय के किसानों को दे दी ।**
- इस विद्रोह में गंगा नारायण और बुद्धो भगत ने भूमिका निभाई यह विद्रोह मुख्य रूप से रांची हजारीबाग पलामू मानभूम और सिंह भूमि क्षेत्र में फैला ।

संथाल विद्रोह (1855)

- **सन् 1855 ईस्वी में जमींदार और साहूकारों के अत्याचार और भूमि कर अधिकारियों के दमनात्मक व्यवहार के प्रति सिद्धू एवं कान्हू के नेतृत्व में राजमहल एवं भागलपुर के संस्थान आदिवासियों ने विद्रोह कर दिया ।**
- जिसके फलस्वरूप विद्रोहियों ने संथाल परगना गठित करने की मांग की और अपनी सशक्त प्रकृति के कारण विद्रोह वीर भूमि सिंह भूमि बांकुरा हजारीबाग मुंगेर तथा भागलपुर जिलों में फैल गया ।
- सन् 1855 से 56 ईस्वी में ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक सैनिक कार्यवाही द्वारा संथाल विद्रोह को कुचल दिया गया तथा **इस क्षेत्र में शांति स्थापित करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने विद्रोहियों की पृथक संथाल परगना गठित करने की मांग को स्वीकार कर लिया**

➢ **चुआर विद्रोह (1798)**

दुर्जन सिंह तथा जगन्नाथ के नेतृत्व में बंगाल के मिदनापुर (मेदिनीपुर) जिले में 1798 ईस्वी में यह विद्रोह हुआ इस विद्रोह का मुख्य कारण भूमि कर एवं अकाल के कारण उत्पन्न आर्थिक संकट था इस विद्रोह में आत्म विनाश की नीति अपनाते हुए श्री कैला पाल दल भूमि बाराभूम एवं ढोल का के शासकों और चुआर के आदिवासियों ने योगदान दिया यह विद्रोह रुक रुक कर 30 वर्षों तक चला।

➢ **खासी विद्रोह**

- **भारत के उत्तरी पूर्वी क्षेत्र में जब अंग्रेजों ने खासी की पहाड़ियों से लेकर सिलहट के बीच सड़क मार्ग बनाना प्रारंभ किया तो स्थानीय लोगों ने इसे ब्रिटिश राज्य का उनकी स्वतंत्रता पर हस्तक्षेप मानते हुए विद्रोह किया** और स्थानीय खम्पाटी तथा सिंहपो लोगों ने राजा तीरथ सिंह के नेतृत्व में आंदोलन किया ।
- इस आंदोलन में श्री वीर मानिक और मुकुंद सिंह ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई खासी विद्रोह 1833 ईस्वी तक कठोर सैन्य कार्यवाही द्वारा कुचल दिया गया

➢ **अहोम आदिवासी विद्रोह (1828)**

- यह **ब्रिटिश सरकार ने 1828 ईस्वी में असम राज्य के अहोम प्रदेश को ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाने का प्रयत्न किया तो अहोम आदिवासियों ने गोमधर कुंवर के नेतृत्व में विद्रोह कर दिया ।**
- उस समय इस विद्रोह को सैन्य कार्यवाही द्वारा दमन पूर्वक नीति से कुचल दिया गया परंतु 1830 ईस्वी में पुणे विद्रोह को देखते हुए अंग्रेजों ने असम के राजा पुरंदर सिंह को असम के प्रदेश अहोम विद्रोह को शांत किया

➢ **फरायजी विद्रोह (1838)**

- बंगाल के फरीदपुर नामक स्थान पर फरायजी संप्रदाय के अनुमोदन पर शरीयातुल्ला ने इस विद्रोह का नेतृत्व किया और शरीयातुल्ला के पुत्र दादू मियां ने अंग्रेजों को बंगाल से बाहर खदेड़ने के लिए तथा जमीदारों के अत्याचारों को समाप्त करने के लिए 1838 ईस्वी में इस विद्रोह किया ।

- **यह विद्रोह अट्ठारह सौ सत्तावन ईस्वी तक चला** परंतु किसी सक्रिय नेता के अभाव में इस आंदोलन ने दम तोड़ दिया और इस आंदोलन के लोग बहावी आंदोलन से जुड़ गए

पश्चिम भारत के प्रमुख आदिवासी विद्रोह

भील विद्रोह (1818)

- **1818 में भील विद्रोह का प्रारंभ हुआ यह भारत के पश्चिमी क्षेत्र में हुआ इस विद्रोह का मुख्य कारण कृषि से संबंधित परेशानियां और अंग्रेजों द्वारा लगाए जाने वाले टैक्स थे** 1825 ईस्वी में सेवाराम के नेतृत्व में भीलों ने पुनः विद्रोह किया ।
- 1846 ई. तक भील विद्रोह चलता रहा, भील विद्रोह को भड़काने का आरोप ईस्ट इंडिया कम्पनी ने पेशवा बाजीराव द्वितीय और त्र्यंबक जी पर लगा दिया।

बघेरा विद्रोह

- यह विद्रोह ओखा मंडल के बघेरा लोगों द्वारा सन् 1818 से 1819 ई. तक बड़ौदा के गायकवाड़ राजा द्वारा किया गया।
- **इस विद्रोह का मुख्य कारण जमींदारों द्वारा अंग्रेजों की सहायता से ज्यादा कर वसूली करना था** और 1820 ईस्वी में एक सैन्य कार्यवाही द्वारा बघेरा विद्रोह का भी दमन कर दिया गया ।

कित्तूर विद्रोह

- कित्तूर के स्थानीय शासक की विधवा रानी चेन्नमा ने किया क्योंकि अंग्रेजों ने राजा के दत्तक पुत्र को मान्यता नहीं दी यद्यपि ब्रिटिश सरकार ने दमनात्मक कार्यवाही द्वारा इस विद्रोह को दबा दिया यह विद्रोह 1824 से 1829 ईस्वी तक चला

कच्छ विद्रोह (1819)

- **कच्छ के राजा भारमल को अंग्रेजों द्वारा शासन से बेदखल करना कच्छ विद्रोह का मुख्य कारण था।**
- अंग्रेजों ने कच्छ के अल्प वयस्क पुत्र को वहां का शासक बना दिया और भू-कर में वृद्धि कर दी इसके विरोध स्वरूप भारमल और उसके समर्थकों ने 1819 में यह विद्रोह शुरू कर दिया

भारत के अन्य प्रमुख विद्रोह

- **पॉलीगार विद्रोह 1801**
- तमिलनाडु में नई भूमि व्यवस्था लागू करने के बाद ब्रिटिश सरकार के खिलाफ सन 1801 ईस्वी में वहां के स्थानीय पॉली वालों ने वीपी कट्टा बामन्नान के नेतृत्व में विद्रोह किया गया और यह विद्रोह 1856 ईस्वी तक चला ।

पाइक विद्रोह (1817)

- मध्य उड़ीसा में पाइक जनजाति द्वारा सन् 1817 ईस्वी से 1825 ईस्वी तक यह विद्रोह किया इस विद्रोह के नेतृत्व कर्ता बख्शीजग बंधु ने किया

सूरत का नमक विद्रोह (1817)

- अंग्रेजों द्वारा **नमक के कर में 50 पैसे की वृद्धि** करने पर इसका विरोध करने के लिए 1844 ईस्वी में सूरत के स्थानीय लोगों ने यह विद्रोह किया इस **विद्रोह के परिणाम स्वरूप अंग्रेजों ने बढ़ाए नमक करों को वापस ले लिया।**

नागा विद्रोह (1931)

- नागा विद्रोह रोगमइ जदोनांग के नेतृत्व में भारत के पूर्वी राज्य नागालैंड में हुआ। नाग आंदोलन का मुख्य उद्देश्य नागा राज्य की स्थापना करके प्राचीन धर्म को स्थापित करना था।
- अंग्रेजों ने नेता जदोनांग को गिरफ्तार करके 29 अगस्त 1931 को फांसी पर लटका दिया।
- इसके बाद में इस **आंदोलन की बागडोर एक नागा महिला गौंडिनल्यू ने अपने हाथों में ले ली इन्होंने नागा आंदोलन को गाँधीजी के सविनय अवज्ञा आंदोलन से जोड़कर इस आंदोलन को विस्तारित किया।**
- गौंडिनल्यू ने पूर्व नेता जदोनांग के विचारों से प्रेरित होकर एक होर्का पंथ की स्थापना की।
- **पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् इस महिला को रानी की उपाधि से सम्मानित किया** और रानी गौंडिनल्यू को कारावास से मुक्त करके स्वतंत्र करवाया।

खंड एवं सवार विद्रोह (1837)

- खंड एवं सवार विद्रोह **1837 ईस्वी से लेकर 1856 ईस्वी तक बंगाल तमिलनाडु तथा मध्य भारत में रहने वाली खोंड तथा सवार नामक जनजातियों द्वारा चलाया गया।**
- **इस विद्रोह का मुख्य कारण अंग्रेजी सरकार द्वारा नरबलि पर रोक तथा नए कर लगाना था।** खोंड एवं सवार विद्रोह का नेतृत्व श्री चक्र बिसोई नीतियाँ ने किया।
- 1857 में शुरू हुए इस विद्रोह में राधा कृष्ण दंडसेन को अंग्रेजों ने फांसी पर लटका दिया और यह विद्रोह समाप्त हो गया।

युआन जुआंग विद्रोह (1867)

- युआन विद्रोह 1867 ई. ने रतन नायक के नेतृत्व में क्योंझर में हुआ था क्योंझर के राजा के राज्य अभिषेक पर युआन सरदारों को उपस्थित होना अनिवार्य था।
- इस प्रथा को अंग्रेज सरकार द्वारा एकदम से समाप्त कर दिया जिससे क्योंझर राज्य में यह विद्रोह भड़क गया और अंग्रेजों ने इस विद्रोह को कठोर दंडात्मक कार्यवाही द्वारा कुचल दिया।
- युवा लोगों ने दूसरा विद्रोह धरनी नायक के नेतृत्व में 1891 ईस्वी में किया काल एवं जुआंग लोगों ने इस आंदोलन में भाग लिया घड़ी नायक के नेतृत्व में स्थानीय जनता के सहयोग से क्योंझर के राजा को कटक भागना पड़ा और स्थानीय प्रशासन के सहयोग से अंग्रेजों ने यह विद्रोह भी कुचल दिया।

खोण्डा डोरा विद्रोह (1900)

- खोण्डा डोरा विद्रोह विशाखापट्टनम के डाबर क्षेत्र में सन् उन्नीस सौ में **खोण्डा डोरा नामक जनजाति द्वारा प्रारंभ किया गया।**
- इस विद्रोह के नेतृत्वकर्ता कोरा मलैया थे कोरा मलैया ने स्वयं को पांडवों का अवतार तथा अपने पुत्र को श्री कृष्ण का अवतार बताया अंग्रेजों ने कठोर और बर्बर सैन्य कार्यवाही से इस विद्रोह को भी कुचल दिया।

विजय नगर का विद्रोह (1765)

- 1765 ईस्वी में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने राज्य के उत्तरी जिलों पर अधिकार करके कठोर नीति का पालन किया।
- 1794 ईस्वी में राजा को सेना भंग करने तथा ₹300000 देने के लिए कहा गया जिससे राजा सहमत हुआ और असहमति के परिणाम स्वरूप राजा की जागीर को जब्त कर लिया गया अंग्रेजी सेना से लड़ते हुए राजा के मरने के बाद ईस्ट इंडिया कम्पनी ने राजा के बड़े बेटे को जागीर पुणे वापस कर वहां शांति की स्थापना की।

दीवान बेलाटम्पी का विद्रोह(1805)

- त्रावणकोर के राजा को लार्ड वेलेजली ने 1805 ईस्वी में वादा कर दिया परंतु राजा ने संधि की शर्तों से असहमति व्यक्त करते हुए कर देने में आनाकानी की जिससे अंग्रेजों का व्यवहार थोड़ा कठोर हो गया जिसके फलस्वरूप रूप नायर बटालियन के सहयोग से दीवान बेलाटम्पी में विद्रोह कर दिया अंग्रेजों ने दीवार विराट एमपी का विद्रोही कार्यवाही द्वारा दबा दिया।

खामती विद्रोह (1843)

- अहोम राजा ने म्यांमार की खामती जाति को बसने की इजाजत देने के बाद यह लोग सदियां के आस-पास क्षेत्रों में बस गए अंग्रेजों ने इनकी रीति रिवाज एवं राजस्व वसूली को लेकर मतभेद होने पर खामती जाति के लोगों ने रून् गुहाई और खवा गुहाई के मजबूत नेतृत्व में दुगना कर दिया और सदियां में स्थित अंग्रेजी रेजीमेंट के मेजर वाइट को मौत के घाट उतार दिया।
- परंतु सरदारों की आपसी फूट का लाभ उठाया और 1843 ईस्वी में इस विद्रोह को भी कुचल दिया गया।

कोया विद्रोह (1879)

- कोया विद्रोह दो चरणों में हुआ पहले चरण का नेतृत्व टेम्पा सोरा ने किया और द्वितीय चरण में राजन अनंत शैय्यार नेतृत्व किया।
- कोया आंदोलन गोदावरी के पूर्वी क्षेत्र में रम्पा प्रदेश में शुरू हुआ। इस विद्रोह का मुख्य कारण आदिवासियों के जंगल संबंधी प्राकृतिक अधिकारों को अंग्रेजों द्वारा खेल लिया गया तथा कोया लोगों पर ताड़ी के घरेलू उत्पादन पर कर लगा देना मुख्य कारण था।
- राजू रम्पा में कोया विद्रोह का कुछ समय तक नेतृत्व किया द्वितीय चरण में कोया विद्रोह का नेतृत्व अनंत शैय्यार ने

भारतीय संविधान

अध्याय - 1

संविधान सभा एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

राजव्यवस्था का परिचय –

राज्य, राज्य के तत्व तथा राजनीतिक व्यवस्था की आवश्यकता :-

- राज्य शब्द का प्रयोग यू तो विभिन्न प्रांतों जैसे उत्तर प्रदेश,तमिलनाडु आदि को सूचित करने के लिए भी होता है किंतु इसका वास्तविक अर्थ **किसी प्रांत से ना होकर किसी समाज की राजनीतिक संरचना से होता है।**
- वस्तुतः यह एक अमूर्त अवधारणा है अर्थात् इसे बौद्धिक स्तर पर समझा तो जा सकता है किंतु देखा नहीं जा सकता।
- उदाहरण के लिए भारत की सरकार संसद न्यायपालिका राज्यों की सरकारें नौकरशाही से जुड़े सभी अधिकारी इत्यादि की समग्र संरचना ही राज्य कहलाती है।

राज्य के तत्व :-

(1) भू-भाग (2) जनसंख्या (3) सरकार
(4) संप्रभुता

(1) भू-भाग :- अर्थात् एक ऐसा **निश्चित भौगोलिक प्रदेश** होना चाहिए,जिस पर उस राज्य की सरकार अपनी राजनीति क्रियाएँ करती हों। उदाहरण के लिए भारत का संपूर्ण क्षेत्रफल भारत राज्य का भौगोलिक आधार या भू-भाग है।

(2) जनसंख्या :- राज्य होने की शर्त है कि उसके भू-भाग पर **निवास करने वाला एक ऐसा जनसमूह होना चाहिए,**जो राजनीतिक व्यवस्था के अनुसार संचालित होता हों। यदि जनसंख्या ही नहीं होगी तो राज्य का अस्तित्व निरर्थक हो जाएगा।

(3) सरकार :- सरकार एक या एक से अधिक व्यक्तियों का वह समूह है **जो व्यावहारिक स्तर पर राजनीतिक शक्ति का प्रयोग करता है।** 'राज्य' और 'सरकार' में यही अंतर है कि **राज्य एक अमूर्त संरचना है** जबकि **सरकार** उसकी **मूर्त व व्यावहारिक अभिव्यक्ति।**

(4) संप्रभुता या प्रभुसत्ता :- यह राज्य का अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्व है। इसका अर्थ है कि राज्य के पास अर्थात् उसकी सरकार के पास अपने भू-भाग और जनसंख्या **की सीमाओं के भीतर कोई भी निर्णय करने की पूरी शक्ति होनी चाहिए तथा** उसे किसी भी बाहरी और भीतरी दबाव में निर्णय करने के लिए बाध्य नहीं होना चाहिए।

राज्य के यह चारों तत्व अनिवार्य है, वैकल्पिक नहीं। यदि इनमें से एक भी अनुपस्थित हो तो राज्य की अवधारणा निरर्थक हो जाती है।

शासन के अंग

(1) विधायिका (अर्थात् कानून बनाने वाली संस्था)

(2) कार्यपालिका (अर्थात् कानूनों के अनुसार शासन चलाने वाली संस्था)

(3) न्यायपालिका (अर्थात् कानूनों के अनुसार विवादों का समाधान करने वाली संस्था)

शासन के तीनों अंगों में संबंध :-

- किसी देश की राजव्यवस्था को समझने के लिए यह जानना भी जरूरी होता है कि वहाँ शासन के तीनों अंगों में कैसा संबंध है? मोटे तौर पर यह संबंध निम्न प्रकार का हो सकता है -
- कहीं-कहीं यह तीनों अंग परस्पर जुड़े होते हैं उदाहरण के लिए राज्य तंत्र में विधायिका कार्यपालिका तथा न्यायपालिका तीनों का सर्वोच्च अधिकारी राजा होता है। अधिनायक तंत्र/तानाशाही तथा धर्म तंत्र में भी ऐसी ही व्यवस्था देखी जाती है यह लक्षण किसी राजव्यवस्था के पारंपरिक तथा गैर-लोकतांत्रिक होने की ओर इशारा करता है।
- कुछ देशों में **विधायिका और कार्यपालिका में नजदीक का संबंध होता** है, जबकि **न्यायपालिका इनसे अलग होती** है। यह व्यवस्था **संसदीय प्रणाली वाले देशों** में दिखाई पड़ती है। इनमें कार्यपालिका,विधायिका का ही अंग होती है जबकि कार्यपालिका इन दोनों से पृथक और स्वतंत्र होती है। **भारत और ब्रिटेन** को मोटे तौर पर इसके कारण के रूप में देखा जा सकता है।
- **अमेरिका** जैसे देशों में यह संबंध कुछ अलग है। वहां यह **तीनों अंग एक दूसरे से पृथक होते हैं।** इसे **"शक्तियों के पृथक्करण का सिद्धांत"** कहते हैं। कार्यपालिका के प्रमुख अर्थात् राष्ट्रपति का चुनाव जनसाधारण द्वारा निर्वाचित निर्वाचक-गण के माध्यम से होता है। विधायिका के दोनों सदनों का चुनाव जनता अलग अलग तरीके से करती है। न्यायपालिका के पदाधिकारियों का चयन राष्ट्रपति करता है परन्तु इसके लिए उसे सीनेट के समर्थन की जरूरत पड़ती है। इस प्रकार शासन के तीनों अंग एक-दूसरे की शक्तियों का निर्वाहन करते हैं और इसके लिए संविधान में कई विशेष प्रावधान भी किए गए हैं। इस सिद्धांत को "**नियंत्रण व संतुलन का सिद्धांत**" कहते हैं।
- जहां तक भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का प्रश्न है इसमें शासन के तीनों अंगों का संबंध ना तो पूरी तरह अमेरिका जैसा है और ना ही इंग्लैंड जैसा है। भारत में ब्रिटेन की तरह कार्यपालिका विधायिका से ही बनती है क्योंकि भारत में संसदीय प्रणाली को अपनाया गया है। इसके बावजूद भारतीय संसद ब्रिटिश संसद की तरह इतनी ताकतवर नहीं है कि उसके ऊपर सीमाएं आरोपित ना की जा सकें। **भारतीय न्यायपालिका** को अमेरिकी न्यायपालिका की तरह यह शक्ति प्राप्त है कि वह संसद द्वारा पारित कानून का **न्यायिक अवलोकन** कर सके और यदि वह कानून संविधान के मूल ढांचे के विरुद्ध है तो उसे समाप्त कर सकें।

शासन प्रणालियों के विभिन्न प्रकार

प्रकार -1

राजनीतिक व्यवस्था दुनिया के हर समाज में हमेशा रही है, किंतु सरकार या शासन प्रणालियों की संरचना हमेशा एक समान नहीं रही है। शासन प्रणालियों के विभिन्न रूप देखे जा सकते हैं।

प्रकार -2

शासन प्रणाली का वर्गीकरण कुछ अन्य दृष्टि- कोणों से भी किया जा सकता है। दो प्रमुख आधार निम्नलिखित हैं:-

(1) केंद्र और प्रांतों के संबंधों के आधार पर :-

(a) परिसंघात्मक प्रणाली
(b) संघात्मक प्रणाली
(c) एकात्मक प्रणाली

(2) विधायिका तथा कार्यपालिका के संबंधों के आधार परः-

(a) संसदीय प्रणाली
(b) अध्यक्षीय प्रणाली

भारत की प्रणाली :-

भारतीय संविधान निर्माता इस प्रश्न को लेकर अत्यंत सजग थे कि भारत के लिए अध्यक्षीय प्रणाली बेहतर होगी या संसदीय प्रणाली? काफी सोच विचार के बाद उन्होंने **संसदीय प्रणाली को चुना** जिसके दो प्रमुख कारण थे - प्रथम,भारतीय जनता को ब्रिटिश शासन के तहत संसदीय प्रणाली का पर्याप्त अनुभव हो चुका था तथा द्वितीय, **भारत में विद्यमान क्षेत्रीय,सामाजिक तथा धार्मिक वैविध्य** को देखते हुए संसदीय प्रणाली ज्यादा बेहतर प्रतीत हो रही थी 1990 के दशक में जो राजनीतिक अस्थिरता की समस्या केंद्रीय स्तर पर उत्पन्न हुई उस समय कुछ लोगों ने यह कहा कि अध्यक्षीय प्रणाली को स्वीकार कर लिया जाना चाहिए,किंतु अस्थिरता की समस्या का धीरे-धीरे समाधान हो गया और आज यह मानने में कोई समस्या नहीं है **कि भारतीय समाज की विशिष्ट जरूरतों की पूर्ति के लिए संसदीय प्रणाली का ही चयन किया जाना उपयुक्त था।**

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- भू-भाग, जनसंख्या, सरकार तथा संप्रभुता राज्य के अनिवार्य तत्व हैं।
- विधायिका कार्यपालिका तथा न्यायपालिका प्रायः सभी देशों में शासन के प्रमुख अंग है।
- शासक समूह में शामिल व्यक्तियों के संख्या के आधार पर राजतंत्र/तानाशाही, अल्पतंत्र/गुट तंत्र तथा लोकतंत्र प्रमुख शासन प्रणाली है।
- विधायिका तथा कार्यपालिका के संबंधों के आधार पर संसदीय तथा अध्यक्षीय प्रणाली शासन के प्रमुख प्रकार है।
- परिसंघात्मक शासन प्रणाली को **'अविनाशी राज्यों का विनाशी संगठन' कहा जाता है।**
- संघात्मक शासन प्रणाली को **'अविनाशी राज्यों का अविनाशी संगठन'** कहा जाता है। संघात्मक से तात्पर्य है राज्यों का केन्द्र से अधिक शक्तिशाली होना।
- **एकात्मक प्रणाली** को **'विनाशी राज्यों'** का **अविनाशी संगठन'** कहा जाता है।
- संसदीय प्रणाली में विधायिका सामान्यतः **निम्न सदन** तथा **उच्च सदन** में विभाजित रहती है।
- संसदीय प्रणाली में राष्ट्रपति या राज्याध्यक्ष / राष्ट्र अध्यक्ष की भूमिका सामान्यतः प्रतीकात्मक होती है, वास्तविक रुप से शासन पर उनका कोई विशेष प्रभाव नहीं होता।

भारतीय संवैधानिक योजना की अन्य प्रमुख लोकतांत्रिक देशों के साथ तुलना :-

ब्रिटिश संवैधानिक योजना :-

- ब्रिटिश शासन प्रणाली **"संवैधानिक राजतंत्र"** पर आधारित है। 1688 ई. से पहले ब्रिटेन में राजतंत्र चलता था, किंतु 1688 ई. में हुई गौरवमयी क्रांति ने राजतंत्र को हटाकर संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना कर दी। इसका अर्थ है कि आजकल ब्रिटेन में राजा के पास नाम मात्र की शक्ति है,जबकि वास्तविक शक्तियाँ संविधान के अंतर्गत काम करने वाली संस्थाओं जैसे संसद के पास आ गई हैं।
- ब्रिटेन का **लोकतंत्र संसदीय प्रणाली** पर आधारित है, जिसका अर्थ है कि **कार्यपालिका का गठन विधायिका अर्थात् ब्रिटिश संसद के सदस्यों में से ही होता** है। चूँकि संसदीय व्यवस्था का जन्म ब्रिटिश संसद से ही हुआ था इसलिए **संसदीय प्रणाली** को **वेस्टमिंस्टर प्रणाली** भी कहा जाता है। ध्यातव्य है कि 'वेस्टमिंस्टर' लंदन का वह स्थान है,जहां ब्रिटिश संसद भवन स्थित है।
- ब्रिटेन का संविधान अलिखित संविधान है, इसका अर्थ यह है कि यहाँ औपचारिक रूप से गठित किसी संविधान सभा ने कोई ऐसा अकेला दस्तावेज तैयार नहीं किया है,जिसे ब्रिटिश संविधान की संज्ञा दी जा सके।
- ब्रिटेन की संसद अत्यधिक शक्तिशाली है जिसका मूल कारण संविधान का अलिखित होना है। क्योंकि संविधान संसद की शक्तियों पर कोई नियंत्रण लागू नहीं करता, इसलिए **ब्रिटेन की संसद विधि निर्माण की साधारण प्रक्रिया से ही संविधान को बदल सकती हैं।** यही कारण है कि ब्रिटिश संविधान को सुनम्य या लचीला संविधान भी कहा जाता हैं।
- ब्रिटेन की शासन प्रणाली **एकात्मक** है, संघात्मक नहीं। एकात्मक शासन का अर्थ है कि स्थानीय शासन की इकाइयों को कानून बनाने का स्वतंत्र अधिकार नहीं है उन्हें ब्रिटिश संसद द्वारा निर्मित कानूनों के अनुसार ही कार्य करना होता है।
- ब्रिटिश संसद के **दो सदन** हैं :- **कॉमन्स सभा तथा लॉर्ड्स सभा**। कॉमन्स सभा को निचला सदन भी कहा जाता है और लॉर्ड्स सभा को उच्च सदन कहते हैं।
- ब्रिटिश कार्यपालिका एक मंत्रीपरिषद् के अधीन काम करती है जिसका अध्यक्ष प्रधानमंत्री होता है।

- ध्यातव्य है कि सामान्यतः लॉर्ड्स सभा के सदस्य राजनीति में भाग नहीं ले सकते। ऐसे बहुत कम उदाहरण हुए हैं वहां लॉर्ड्स सभा के सदस्यों ने राजनीतिक पद संभाले है।
- इंग्लैंड की न्यायपालिका सामान्यतः कार्यपालिका और विधायिका के हस्तक्षेप से मुक्त है। हालांकि संसदीय प्रणाली के अंतर्गत वहां शक्तियों के पृथक्करण की वैसी गुंजाइश नहीं है, जैसी संयुक्त राज्य अमेरिका में। इस दृष्टि से भी ब्रिटिश संसद न्यायपालिका से बहुत अधिक शक्तिशाली है।
- **2010 में इंग्लैंड में सर्वोच्च न्यायालय का गठन किया गया** है, जिसमें **1अध्यक्ष, 1उपाध्यक्ष तथा 10 अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति** का प्रावधान है। वस्तुतः यह 12 न्यायाधीश 'हाउस ऑफ लॉर्ड्स' के विधि लॉर्ड्स ही है। इसलिए इस परिवर्तन से कोई संरचनागत परिवर्तन नहीं हुआ है, अंतर सिर्फ इतना आया है कि अब इंग्लैंड के पास औपचारिक रूप से एक सर्वोच्च न्यायालय हो गया है।
- इंग्लैंड की न्यायपालिका के संबंध में यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि यह 'विधि द्वारा **स्थापित प्रक्रिया' के सिद्धांत के अनुसार कार्य करती है,** ना कि 'यथोचित विधि प्रक्रिया' के अनुसार।

अमेरिका की संवैधानिक योजना :-

अमेरिकी राजनीतिक संरचना को निम्न बिंदुओं से समझा जा सकता है :-

- **संयुक्त राज्य अमेरिका का संविधान संघात्मक है।** ध्यातव्य है कि स्वाधीनता प्राप्ति के बाद 13 स्वतंत्र राज्यों के समझौते के रूप में इस संविधान का निर्माण हुआ था इसलिए **यह अपनी मूल प्रकृति में ही संघात्मक है।** शुरू में अमेरिका स्वतंत्र राज्यों का परिसंघ था,किंतु अब यह संघ बन गया है **अर्थात् राज्यों को संघ से प्रथक होने की शक्ति अब नहीं है।**
- **अमेरिकी लोकतंत्र 'अध्यक्षीय प्रणाली'** पर आधारित है इंग्लैंड की तरह संसदीय प्रणाली पर नहीं अध्यक्षीय प्रणाली के कारण अमेरिका का राष्ट्रपति वास्तविक राज्याध्यक्ष होता है,सिर्फ नाममात्र का नहीं। वह कार्यपालिका का प्रमुख होता है।
- अमेरिकी राष्ट्रपति अमेरिका की कार्यपालिका का प्रमुख कार्यकारी होता है। उसका चुनाव 4 वर्षों के लिए होता है तथा कोई व्यक्ति अपने जीवन काल में 2 से ज्यादा बार राष्ट्रपति पद के लिए नहीं चुना जा सकता।
- राष्ट्रपति का कार्यकाल एकदम स्थिर होता है और उसे केवल महाभियोग की प्रक्रिया से ही कार्यकाल के बीच में हटाया जा सकता है जो कि लगभग असंभव है
- राष्ट्रपति अपने मंत्रिमंडल के निर्माण के लिए ब्रिटिश व्यवस्था की तरह विधायिका के सदस्यों में से चयन करने को बाध्य नहीं होता। वह अपनी पसंद से किसी भी व्यक्ति को मंत्री बना सकता है और जब चाहे उसे हटा भी सकता है।
- **अमेरिकी विधायिका को कांग्रेस कहा जाता** है। क्योंकि अमेरिका संघीय प्रणाली पर आधारित है इसलिए स्वाभाविक तौर पर **वहां** का **विधानमंडल द्विसदनीय** है।
- प्रतिनिधि सभा में **435 सदस्य होते** हैं, जो देश की जनता द्वारा चुने जाते हैं।
- अमेरिकी कांग्रेस के **दूसरे सदन सीनेट** का ढांचा संघात्मक शासन प्रणाली आवश्यकता के अनुरूप है। प्रत्येक राज्य को सीनेट में 2 प्रतिनिधि भेजनें का अधिकार है चाहे जनसंख्या या क्षेत्र की दृष्टि से राज्य का आकार कुछ भी हो। चूँकि अभी संयुक्त राज्य अमेरिका में 50 राज्य हैं इसलिए सीनेट में 100 सदस्य होते हैं।
- संयुक्त राज्य अमेरिका का राष्ट्रपति सीनेट का सभापति होता है ध्यातव्य है कि अमेरिका में उपराष्ट्रपति का चुनाव भी राष्ट्रपति के चुनाव के साथ ही निर्वाचक गण के माध्यम से 4 वर्षों के लिए होता है।
- अमेरिकी राजनीतिक प्रणाली में सर्वोच्च न्यायालय की भूमिका बहुत महत्त्वपूर्ण है। **वर्तमान में इसमें कुल 9 न्यायाधीश होते हैं,जिनमें से एक मुख्य न्यायाधीश होता** है। ये **न्यायाधीश आजीवन अपने पद पर बने रहते हैं,** परंतु यदि कोई न्यायाधीश कम से कम 10 वर्षों की सेवा पूरी कर चुका है और 70 वर्ष की आयु का हो गया हो तो स्वेच्छा से सेवानिवृत्त हो सकता है। इसके अलावा अन्य न्यायाधीशों को हटाने का एकमात्र तरीका महाभियोग है जो देशद्रोह,जघन्य अपराध या भारी भ्रष्टाचार जैसे कारणों के आधार पर ही लगाया जा सकता है।
- अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय **मुख्यतः दो शक्तियों का प्रयोग करता है** जो उसकी सर्वोच्चता को सिद्ध करती हैं- **न्यायिक पुनरीक्षण तथा अधिनिर्णयन।**

स्विट्जरलैंड की संवैधानिक योजना :-

- स्विट्जरलैंड का संघात्मक ढांचा बाकी देशों से कुछ अलग है। **यह देश कई राजनीतिक के कार्यों से मिलकर बना है जिनमें से कुछ को कैंटन और कुछ को अर्ध कैंटन कहते हैं।** स्विस परिसंघ में कुल 20 कैंटन तथा 6 अर्ध कैंटन है। अर्ध कैंटन भी कैंटन ही है, इस नामकरण का सिर्फ ऐतिहासिक महत्व है। प्रत्येक कैंटन का अपना पृथक संविधान,अपनी विधानसभा और अपनी सरकार है। 1874 ई. से चले आ रहे स्विस संविधान के तहत संघीय सरकार को कुछ निश्चित शक्तियां दी गई हैं, जबकि अवशिष्ट शक्तियां कैंटनो के पास हैं।
- संघ के स्तर पर संघीय सभा विधायिका का कार्य करती है। **संघात्मक ढांचे के अनुरूप इसके दो सदन हैं। निचले सदन को राष्ट्रीय परिषद् का जाता है, जबकि उच्च सदन को राज्य परिषद् कहते हैं।** निचले सदन अर्थात् राष्ट्रीय परिषद् में 200 सदस्य होते हैं, जो सार्वजनिक वयस्क मताधिकार के आधार पर चुने जाते है। यह चुनाव आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अनुसार दलीय सूची प्रणाली के आधार पर आयोजित होता है। इन सांसदों का चयन 4 वर्षों के लिए होता है। राज्य परिषद् में कुल 46 सदस्य

अध्याय – 4

उद्देशिका (प्रस्तावना)

- **सर्वप्रथम अमेरिकी संविधान में संविधान प्रस्तावना को सम्मिलित किया गया था ।**
- भारतीय संविधान की प्रस्तावना पंडित नेहरू द्वारा बनाये गये **'उद्देश्य प्रस्ताव' पर आधारित** है।
- **42 वें संविधान संशोधन 1976 द्वारा समाजवाद, धर्मनिरपेक्ष और अखंडता शब्द जोड़े गये ।**
- एन. ए. पालकीवाला ने प्रस्तावना को संविधान का परिचय पत्र कहा ।

संविधान की प्रस्तावना के विषय वस्तु

"हम भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व संपन्न, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक गणराज्य बनाने के लिए और इसके समस्त नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, धर्म, विश्वास व उपासना को स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए तथा व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता तथा अखंडता सुनिश्चित करने वाला बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ संकल्पित होकर

अपनी इस संविधान सभा में आज दिनांक 26 नवम्बर 1949 को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।"

प्रस्तावना के तत्व

- अधिकार का स्त्रोत भारत की जनता होगी।
- भारत एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणतांत्रिक राज व्यवस्था वाला देश हैं।
- न्याय स्वतंत्रता समता व बस संविधान के उद्देश्य हैं।
- 26 नवम्बर 1949ई.(मिति मार्गशीर्ष शुक्ल सप्तमी सवंत 2006विक्रमी) को संविधान सभा द्वारा अंगीकृत किया गया "हम भारत के लोग, शब्द USA से लिया गया है ।

प्रश्न. संविधान की उद्देशिका में स्वतंत्रता से संबंधित शब्दों का सही क्रम विन्यास हैं?

A. विश्वास, विचार, अभिव्यक्ति, उपासना और धर्म की स्वतंत्रता।

B. विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता।

C. उपासना, धर्म विश्वास, विचार और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता।

D. विचार, विश्वास, धर्म, उपासना और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता ।

उत्तर – B

➢ **प्रस्तावना के मुख्य शब्द**

1. **सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न** – भारत की प्रस्तावना में भारत को प्रभुत्व सम्पन्न राज्य घोषित किया गया है। प्रभुत्व राज्य से आशय है की **राज्य के आंतरिक व बाह्य मामले में किसी अन्य देश का हस्तक्षेप नहीं होगा।**
   राजनीतिक प्रणाली में निम्नलिखित प्रकार की संप्रभुता देखने को मिलती है ।26 जनवरी 1950 को भारत एक संप्रभु **राष्ट्रएव सम्पूर्ण संपन्न बन गया ।**

   (a) वैधानिक संप्रभुता तथा राजनीतिक संप्रभुता
   (b) नाममात्र की संप्रभुता तथा वास्तविक संप्रभुता
   (c) लोकप्रिय संप्रभुता
   (d) नाममात्र की तथा तथ्यात्मक संप्रभुता

- संप्रभुता का सिद्धान्त 17वी सदी के लेकर 1990 तक सैद्धान्तिक एवम व्यवहारिक रूप में एक समान रूप से लागू था अर्थात् किसी भी देश के आन्तरिक तथा बाह्य मामलो में किसी अन्य देश का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं था ।
- लेकिन 1990 के बाद वैश्विक स्तर पर उदारीकरण, निजीकरण एवम वैश्वीकरण की अवधारणा को अपनाया गया और धीरे-धीरे संप्रभुता का सिद्धान्त व्यावहारिक रूप में कमजोर पड़ा । वर्तमान समय में वस्तुओं एवं सेवाओं के आदान-प्रदान के कारण लगभग सभी देशों की अर्थव्यवस्था एक – दूसरे से जुड़ गयी । अतः वर्तमान समय में कोई भी देश व्यावहारिक रूप में पूर्ण संप्रभुता का दावा नही कर सकता ।

2. **समाजवादी** :- समाजवादी शब्द मूल प्रस्तावना में शामिल नहीं था । **42 वें संविधान संशोधन 1976 के माध्यम से इसे प्रस्तावना में जोड़ा गया । भारत में लोकतांत्रिक समाजवाद की अवधारणा को अपनाया गया जोकि गाँधीवादी समाजवाद से प्रभावित है न की कार्ल मार्क्स के वैज्ञानिक समाजवाद से ।**
   भारत में अपनाए गए समाजवाद में लोककल्याण भी निहित है । अर्थात् राज्य के द्वारा उन लोगों को मुख्य धारा में लाने का प्रयास किया जायेगा । जो वंचित, शोषित है अर्थात् राज्य खाद्यान्न, पेयजल, शिक्षा, चिकित्सा ,आवास जैसी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा ।
   साथ ही भारतीय समाजवाद में लोकतांत्रिक समाजवाद पर बल दिया गया । जिसके तहत उत्पादन के साधनों पर राज्य एवं निजी क्षेत्र दोनों को अधिकार दिया गया और वर्तमान समय में धीरे -धीरे राज्य अपना दायरा सीमित कर रहा है और निजी क्षेत्र को बड़ावा दिया जा रहा है ।

3. **पंथनिरपेक्ष** – पंथनिरपेक्ष शब्द भी मूल प्रस्तावना में शामिल नहीं था । 42 वें संविधान संशोधन अधिनियम 1976 के माध्यम से इसे प्रस्तावना में जोड़ा गया ।
   पंथनिरक्षेप राज्य से आशय हैं (भारत के सन्दर्भ में) **राज्य का अपना कोई धर्म नही होगा और राज्य सभी धर्मो का समान रूप से आदर करेगा ।**

प्रश्न. कथन (A) : साम्प्रदायिकता एक मूलतः हैं और सर्वोपरि विचारधारा हैं।
कारण - (R) : बिना साम्प्रदायिक हिंसा के हुए भी सम्प्रदायवाद पल्लवित हो सकता हैं,
नीचे दिए गए कूटों का सही चयन कीजिए -
कूट
A. (A) और (R) दोनों सही हैं एवं (R) (A) की सही व्याख्या करता है।
B. (A) और (R) दोनों सही हैं एवं (R) (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
C. (A) सही है परन्तु (R) गलत है।
D. (A) गलत है परन्तु (R) सही है।
उत्तर – B

पंथनिरपेक्षता राज्य के आधार पर निम्नलिखित दो प्रकार की होती है –

(1) नकारात्मक पंथनिरपेक्षता – यह वह स्थिति है जिसमें राज्य का धर्म से कोई सम्बन्ध नही होता हैं। राज्य लोगों के धार्मिक क्रियाकलापों अथवा धार्मिक अधिकारों को सुरक्षा प्रदान नही करता हैं।
1917 में रूस में हुई बोल्शेविक क्रांति के बाद नकारात्मक पंथनिरपेक्षता को अपनाया गया और चर्च को समाप्त कर दिया गया। अधिकांश साम्यवादी देशों में इस प्रकार की पंथनिरपेक्षता पर ही बल दिया गया।

(2) सकारात्मक पंथनिरपेक्षता – सकारात्मक पंथनिरपेक्षता ऐसी स्थिति को कहा जाता है। जिसमें राज्य का अपना कोई धर्म नही होता है लेकिन राज्य अपने नागरिकों के धार्मिक क्रियाकलापों में होने वाली समस्याओं एवं बाधाओं को दूर करने का प्रयास भी करता है।
भारत में पंथनिरपेक्षता की अवधारणा को अपनाने के पीछे सबसे महत्त्वपूर्ण कारण भारत की धार्मिक विविधता है। तो ऐसी स्थिति में धार्मिक अल्पसंख्यको के हितों की सुरक्षा के लिए राज्य का पंथनिरक्षेप होना आवश्यक होता है।
प्रस्तावना में धर्मनिरपेक्ष शब्द का प्रयोग नहीं किया गया क्योंकि भारत में धर्म का आशय नेतिक संहिता भी होता है।
स्वयं गाँधीजी ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान यह कहा था कि एक धर्मविहीन राज्य की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

4. लोकतंत्रात्मक – यह दो प्रकार का होता है –

प्रत्यक्ष लोकतंत्र	**अप्रत्यक्ष लोकतंत्र**
जनता प्रत्यक्ष रूप से नीति-निर्माण में भागीदारी करती है।	जनता के चुने हए प्रतिनिधि शासन का संचालन करते हैं। संसदीय शासन व्यवस्था – भारत ,ब्रिटेन अध्यक्षात्मक शासन व्यवस्था –अमेरिका दोहरी कार्यपालिका –फ्रांस बहुल कार्यपालिका – स्विटजरलैंड

5. गणराज्य – गणराज्य से आशय है ऐसी व्यवस्था जिसमे राष्ट्राध्यक्ष अथवा राष्ट्र का प्रमुख जनता के द्वारा निर्वाचित होता है न कि वंशानुगत।

राष्ट्राध्यक्ष का निर्वाचन निम्नलिखित दो प्रकार से किया जा सकता है।

(i) प्रत्यक्ष निर्वाचन – इसके अंतर्गत जनता के द्वारा मत देकर राष्ट्राध्यक्ष को चुना जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका तथा रूस में यही व्यवस्था है।

(ii) अप्रत्यक्ष निर्वाचन – इसके तहत जनता के द्वारा चुने गए प्रतिनिधि राष्ट्राध्यक्ष का निर्वाचन करते है। जैसे – **भारत में राज्यों की विधानसभाओ एवं संसद के निर्वाचित सदस्य मिलकर भारत के राष्ट्रपति को चुनते है।**

- ब्रिटेन, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, जापान जैसे देशों में लोकतंत्र तो हैं लेकिन गणतन्त्र नहीं है क्योकि इनका राष्ट्राध्यक्ष वंशानुगत होता है।

राज्य के उद्देश्य – संविधान की प्रस्तावना में राज्य के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए हैं।

(1) न्याय की स्थापना करना – प्रस्तावना में निम्नलिखित **3 प्रकार के न्याय** का उल्लेख है।

I. **सामाजिक न्याय** - सामाजिक न्याय से आशय हैं। **व्यक्ति के मध्य धर्म, जाति, लिंग, संस्कृति आदि के आधार पर भेदभाव की समाप्ति।**

II. **आर्थिक न्याय** – आर्थिक न्याय से आशय आर्थिक समानता नहीं है। आर्थिक न्याय का अर्थ है। **प्रत्येक व्यक्ति के पास इतने आर्थिक संसाधन होने चाहिए की वो अपनी मूलभूत आवश्यकताओ की पूर्ति कर सके।**

III. **राजनीतिक न्याय** – राजनीतिक न्याय से आशय हैं **देश के प्रत्येक नागरिक की राजनीति में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित है।**
उदाहरण – सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार व्यवस्था तथा लोकसभा एवम राज्य की विधान सभाओ में SC व ST के लिए स्थानों का आरक्षण इसका उदाहरण है।

(2) स्वतंत्रता प्रदान करना –
(i) विचार
(ii) अभिव्यक्ति
(iii) विश्वास
(iv) धर्म
(v) उपासना

अध्याय – 8

राष्ट्रपति

- भारत में **'राष्ट्र प्रमुख'** के रूप में **राष्ट्रपति** के **पद की व्यवस्था** को अपनाया गया है। ब्रिटिश क्राउन और अमेरिकी राष्ट्रपति से भिन्न, संविधान निर्माताओं ने भारतीय व्यवस्था के अनुरूप इस पद के एक संतुलित स्वरूप को अपनाया । **गणतांत्रिक प्रणाली** होने के कारण संविधान में **'निर्वाचित राष्ट्रपति'** के प्रावधान को शामिल किया गया।

कार्यपालिका प्रमुख

- मंत्रिमंडलीय कार्यपालिका में सामान्यतः दो प्रमुख होते हैं: एक **'वास्तविक प्रमुख' एवं दूसरा 'नाममात्र या औपचारिक प्रमुख' । भारत में राष्ट्रपति नाममात्र प्रमुख है।** तथा राष्ट्रपति कार्यालय की प्रकृति काफी सीमा तक औपचारिक है ।
- शासन व्यवस्था में औपचारिक प्रमुख की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती है:
- राष्ट्र प्रमुख के रूप में: **राष्ट्रपति देश की एकता, अखंड़ता एवं एकजुटता का प्रतीक है** । अतः व्यवहारिक रूप से राजप्रमुख न होते हुए भी भारतीय राष्ट्रपति को राष्ट्रप्रमुख की भूमिका प्रदान की गयी है।
- दलगत राजनीति से मुक्त रखने हेतु राष्ट्रपति कार्यालय को दलगत राजनीति से ऊपर माना जा सकता है ।
- प्रशासन की निरंतरता हेतु- मंत्रिपरिषद् का कार्यकाल अनिश्चित होता है और यह लोकसभा में बहुमत पर निर्भर करता है । ऐसे में प्रशासन में निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए एक निश्चित कार्यकाल वाले कार्यालय का होना आवश्यक है ।
- संघवादी स्वरूप को बनाए रखने हेतुः भारत के संदर्भ में एक अतिरिक्त कारण, संघवाद भी है । राज्य विधानसभाओं के सदस्य भी राष्ट्रपति के चुनाव में भाग लेते हैं । इसलिए, यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रपति संघ के अतिरिक्त राज्यों का भी प्रतिनिधित्व करता है ।
- **संविधान के भाग 5 के अनुच्छेद 52 से 78 तक में संघ की कार्यपालिका का वर्णन है ।**
- **अनु.52 –भारत का एक** राष्ट्रपति होगा
- **अनु.53 –संघ की समस्त कार्यपालिका शक्तिया** राष्ट्रपतिमें निहित होगी
- **अनु.54 - राष्ट्रपति का निर्वाचन मंडल**
- **अनु.55 - निर्वाचन की पद्धति**
- **अनु.56 – राष्ट्रपति का कार्यकाल**
- **अनु.57 – पुनर्निर्वाचन**
- **अनु.58 – राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार की अहर्ताए**
- **अनु.59 – राष्ट्रपति पद की शर्ते**
- **अनु.60 - राष्ट्रपति पद की शपथ**
- **अनु.61 – राष्ट्रपति पद पर महाभियोग की प्रक्रिया**
- **अनु.-72 – राष्ट्रपति की क्षमा दान की शक्तिया**
- **अनुच्छेद 52 के अनुसार, भारत का एक राष्ट्रपति होगा।** यहाँ ''होगा'' शब्द के लिए ''shall'' का प्रयोग किया गया है, जिसका अर्थ है कि भारत का राष्ट्रपति अपने पद पर सदैव विधमान होगा । यह पद न तो कभी रिक्त रखा जा सकता है और न ही इसे कभी समाप्त किया जा सकता है । राष्ट्रपति का चुनाव, इसके कार्यकाल की समाप्ति से पहले ही संपन्न करवाए जाने का प्रावधान किया गया है । अस्वस्थता के कारण अस्थायी अनुपस्थिति आदि के मामले में उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति का पद धारण करेगा जब तक कि राष्ट्रपति अपना पदभार पुनर्ग्रहण न करें ।

स्थायी कार्यपालिका एवं अस्थायी कार्यपालिका

अनुच्छेद 53 के अनुसार संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित होगी और वह इसका प्रयोग इस संविधान के अनुसार स्वयं या अपने अधीनस्थ अधिकारियों के द्वारा करेगा ।

विवरण

- राष्ट्रपति, अपनी इस कार्यपालिकीय शक्ति का प्रयोग मुख्यतः दो प्रकार के अधीनस्थ अधिकारियों के माध्यम से करता है:
- स्थायी कार्यपालि या नौकरशाही
- अस्थायी या राजनीतिक कार्यपालिका
- स्थायी कार्यपालिका या नौकरशाही
- स्थायी कार्यपालिका के अंतर्गत अखिल भारतीय सेवाएँ (IAS, IPS, IFoS), प्रांतीय सेवाएँ] स्थानीय सरकार के कर्मचारी और लोक उपक्रमों के तकनीकी एवं प्रबंधकीय अधिकारी सम्मिलित होते हैं ।
- नौकरशाही अथवा स्थायी कार्यपालिका की आवश्यकता क्यों ध्
- संविधान निर्माता ब्रिटिश शासन के दौरान अपने अनुभव से गैर-राजनीतिक एवं व्यावसायिक रूप से दक्ष प्रशासनिक मशीनरी के महत्व को जानते थे ।
- नौकरशाही, वह माध्यम है जिसके द्वारा सरकार की लोकहितकारी नीतियाँ जनता तक पहुँचती हैं ।
- सरकार के स्थायी कर्मचारी के रूप में कार्य करने वाले ये प्रशिक्षित एवं प्रवीण अधिकारी, नीतियों को बनाने व उसे लागू करने में मंत्रियों का सहयोग करते हैं ।
- वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में नीति-निर्माण एक अत्यंत ही जटिल कार्य बन गया है जिसके लिए विशेषज्ञता एवं गहन ज्ञान की आवश्यकता है । इसके लिए दक्ष एवं स्थायी कार्यपालिका की आवश्यकता है ।
- राजनीतिक या अस्थायी कार्यपालिका का ध्यान सामान्यतः नीति-निर्माण एवं क्रियान्वयन में अल्पकालीन राजनीतिक लाभ पर केंद्रित होता है । जबकि, स्थायी कार्यपालिका दीर्घकालीन समाजिक - आर्थिक आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए ही नीति-निर्माण एवं क्रियान्वयन में मंत्रियों को परामर्श देती है ।

- सरकारों के बदलने के बावजूद भी स्थायी कार्यपालिका, नीतियों में निरंतरता एवं लोकप्रशासन में एकरूपता बनाए रखने eas अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं ।
- स्थायी कार्यपालिका एवं राजनीतिक कार्यपालिका के मध्य संबंध
- संसदीय शासन प्रणाली में, राजनीतिक कार्यपालिका (मंत्रीपरिषद्, प्रधानमंत्री सहित) सरकार के प्रभारी होते हैं एवं स्थायी कार्यपालिका या प्रशासन इनके नियंत्रण एवं देखरेख में होता हैं ।
- यह मंत्री की जिम्मेदारी है कि वह प्रशासन पर राजनीतिक नियंत्रण रखे ।
- राजनीतिक कार्यपालिका, जहाँ सामूहिक रूप से लोकसभा या विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती हैं, वहीं स्थायीकार्यपालिका या नौकरशाही अपने संबंधित विभागों के मंत्रियों के प्रति उत्तरदयी होती हैं ।
- नौकरशाही से यह अपेक्षा की जाती हैं कि यह राजनीतिक रूप से तटस्थ हो, अर्थात् नौकरशाही, नीतियों पर विचार करते समय किसी राजनीतिक दृष्टिकोण या विचारधार का समर्थन नहीं करेगी ।
- लोकतंत्र में सरकारों के बदलने पर नौकरशाही की जिम्मेदारी है कि वह नई सरकार को अपनी नीति बनाने एवं लागू करने में मदद करें ।
- हमारा संविधान राष्ट्रपति के पद का सृजन करता हैं किंतु शासन की प्रणाली राष्ट्रपतीय नहीं हैं। शासन की राष्ट्रपतीय और संसदीय प्रणाली को समझना एवं उनके भेद जानना आवश्यक हैं । राष्ट्रपति प्रणाली के मुख्य लक्षण इस प्रकार हैं:-
- राष्ट्रपति राज्य का अध्यक्ष होता हैं और साथ ही शासनाध्यक्ष भी । वह राज्य व्यवस्था में शीर्षस्थ होता हैं। वह वास्तव में कार्यपालक होता हैं, नाममात्र का नहीं । उसमें जो शक्तियाँ निहित हैं उनका वह व्यवहार में और वास्तव में उपयोग करता हैं ।
- सभी कार्यपालिका शक्तियाँ राष्ट्रपति में निहित होती हैं । राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त मंत्रिमंड़ल उसे केवल सलाह देता हैं यह आवश्यक नही हैं कि वह उनकी सलाह माने । वह उनकी सलाह लेकर अपने विवेक के अनुसार कार्य कर सकता हैं ।
- राष्ट्रपति जनता द्वारा प्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित होता हैं । राष्ट्रपति के पद की अवधि विधान-मंड़ल की इच्छा पर आश्रित नहीं हैं । विधान-मंड़ल न तो राष्ट्रपति का निर्वाचन करता हैं और न उसे उसके पद से हटा सकता हैं ।
- राष्ट्रपति और मंत्रिमंड़ल के सदस्य, विधान मंड़ल के सदस्य नहीं होते हैं । राष्ट्रपति विधान-मंड़ल की अवधि के अवसान के पूर्व उसका विघटन नहीं कर सकता । **विधान-मंड़ल राष्ट्रपति की पदावधि को महाभियोग द्वारा ही समाप्त कर सकता हैं अन्यथा नहीं** । इस प्रकार राष्ट्रपति और विधान-मंड़ल नियत अवधि के लिए निर्वाचित होते हैं और एक दूसरे से स्वतंत्र होते हैं । एक का दूसरे में हस्तक्षेप नहीं होता।

<u>राष्ट्रपति पद के लिए अर्हताएँ</u>

अनु. 58 के अनुसार राष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए एक व्यक्ति को निम्नलिखित अर्हताओं को पूर्ण करना आवश्यक हैं:

- वह भरत का नागरिक हो ।
- वह 35 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुका हों ।
- वह लोकसभा का सदस्य निर्वाचित होने के योग्य हों।
- वह संघ सरकार अथवा किसी राज्य सरकार अथवा किसी स्थानीय प्राधिकरण अथवा किसी सार्वजनिक प्राधिकरण में लाभ के पद पर न हों ।

<u>अनु. 56 राष्ट्रपति की पदावधि\कार्यकाल (Term of Office)</u>

- अनु. 56 के अनुसार, राष्ट्रपति की पदावधि, उसके पद धारण करने की तिथि से पांच वर्ष तक होती हैं । हालाँकि वह निम्नलिखित रीतियों से अपने कार्यकाल के दौरान ही पदमुक्त हो सकता है:
- भारत के उपराष्ट्रपति को लिखित में त्यागपत्र सौंपकर ।
- अनुच्छेद - 60 में राष्ट्रपति की शपथ का प्रावधान हैं।
- संविधान का अतिक्रमण करने पर अनुच्छेद 61 में वर्णित महाभियोग की प्रक्रिया द्वारा उसे पदमुक्त किया जा सकता हैं । अनु. 61(1) के तहत, महाभियोग हेतु एकमात्र आधार '**संविधान का अतिक्रमण**' उल्लिखित हैं ।
- यदि राष्ट्रपति का पद उसकी मृत्यु, त्यागपत्र, निष्कासन अथवा किन्हीं अन्य कारणों से रिक्त हो तो उपराष्ट्रपति, नये राष्ट्रपति के निर्वाचित होने तक कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा । **यदि उपराष्ट्रपति, का पद रिक्त हों, तो भारत का मुख्य न्यायाधीश (और यदि यह भी पद रिक्त हो तो उच्चतम न्यायालय का वरिष्ठतम न्यायाधीश) कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा ।**
- **पद रिक्त होने की तिथि से छह महीने के भीतर नए राष्ट्रपति का चुनाव करवाया जाना आवश्यक हैं ।** वर्तमान या भूतपूर्व राष्ट्रपति, संविधान के अन्य उपबंधों के अधीन रहते हुए इस पद के लिए पुनर्निर्वाचन का पात्र होगा।

<u>निर्वाचन प्रणाली</u>

- भारत के **राष्ट्रपति के निर्वाचन (अनु. 55)** के लिए **आनुपातिक प्रतिनिधत्व प्रणाली के अनुसार एकल संक्रमणीय मत पद्धति को** अपनाया गया हैं । इस पद्धति के तहत निर्वाचन, **गुप्त मतदान के** माध्यम से एक निर्वाचक मंड़ल द्वारा किया जाता हैं ।
- भारत के राष्ट्रपति के निर्वाचन के लिए सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप से **अप्रत्यक्ष चुनाव प्रक्रिया को अपनाया** गया हैं। (अमेरिकी राष्ट्रपति की निर्वाचन प्रक्रिया सैद्धांतिक रूप से अप्रत्यक्ष जबकि व्यावहारिक रूप से प्रत्यक्ष हैं ।)

सूची-I	भारत के राष्ट्रपति	सूची-2	चुनावी विवरण
a.	राजेन्द्र प्रसाद	i.	निर्विरोध निर्वाचित
b.	जाकिरहुसैन	ii.	द्वितीय वरीयता की मतगणना
c.	वी.वी. गिरी	iii.	दो कार्यकालों के लिए निर्वाचित
d.	नीलम संजीव रेड्डी	iv.	पद धारण के दौरान मृत्यु

कूट :- A B C D
(a) iii iv ii i
(b) i iii iv ii
(c) iii ii i iv

उत्तर - a

निर्वाचक मंडल (Electoral college)

निर्वाचक मंडल में सम्मिलित होते हैं:

- **संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्य ।**
- **राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य**
- **दिल्ली और पुदुचेरी संघ शासित प्रदेशां की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य (70 वें** संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा शामिल ।
- इसका अर्थ है कि निम्नलिखित सदस्यों को राष्ट्रपति चुनाव में मतदन करने की अनुमति नहीं हैं:
- लोकसभा के मनोनीत सदस्यों को
- राज्यसभा के मनोनीत सदस्यों को
- राज्य विधानसभा के मनोनीत सदस्यों को
- राज्यों की विधानपरिषदों के निर्वाचित एवं मनोनीत सदस्यों को
- राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव से संबंधित मामलों को विधि द्वारा विनियमित करने का अधिकार संसद को प्राप्त हैं । राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति निर्वाचन अधिनियम के तहत राष्ट्रपति के पद के लिए नामांकन हेतु एक उम्मीदवार के पास कम से कम 50 प्रस्तावक (electors as proposers) एवं 50 अनुमोदक (electors as seconders) (निर्वाचक (electors) से यहाँ तात्पर्य राष्ट्रपति के निर्वाचक मंड़ल (electoral college) के सदस्यों से हैं) होने चाहिए ।
- जहाँ तक संभव हो, प्रत्येक राज्य की जनसंख्या एवं विधानसभा के कुल निर्वाचित सदस्यों की संख्या के अनुसार राष्ट्रपति के चुनाव में विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधित्व में एकरूपता होनी चाहिए । साथ ही, सभी राज्यों एवं संघ के मध्य भी समानता होनी चाहिए (अनु-55) । दूसरी शर्त यह सुनिश्चित करती हैं कि राष्ट्रपति चुनाव के निर्वाचक मंडल में राज्यों के विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों का समग्र मत मूल्य, संसद के दोनों सदनों के निर्वाचित सदस्यों के मत मूल्यों के लगभग बराबर हों । इस प्रकार, राष्ट्रपति राष्ट्र का प्रतिनिधि होने के साथ-साथ विभिन्न राज्यों के लोगों का भी प्रतिनिधि होगा ।
- विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधित्व में एकरूपता सुनिश्चित करने के क्रम में यह प्रावधान किया गया हैं कि एक राज्य की विधान सभ के प्रत्येक निर्वाचित सदस्य के मत का मूल्य उस राज्य की जनसंख्या को, उस राज्य की विधानसभा के निर्वाचित सदस्यों एवं 1000 के गुणनफल से प्राप्त संख्या द्वारा भाग देने पर प्राप्त संख्या के समान होता हैं । सरल शब्दों में निर्वाचक मंड़ल के प्रत्येक सदस्य, जो किसी राज्य विधान सभा का एक सदस्य है, के मतों के मूल्य की गणना निम्नलिखित सूत्र से की जाती हैं:
- एक विधायक के मत का मूल्य त्र राज्य की कुल जनसंख्या/ (राज्य विधानसभा के निर्वाचित कुल सदस्य 1000
- (0.5 से बड़ी भिन्न संख्या को 01 एवं अन्य भिन्नों को शून्य माना जाएगा ।)
- निम्नलिखित उदाहरण के माध्यम से इस मतगणना विधि को और अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता हैं:
- मान लीजिए, अविभाजित आंध्रप्रदेश राज्य की जनसंख्या 37,129,852 और विधानसभा में निर्वाचित सदस्यों की संख्या 276 हैं । राष्ट्रपति के चुनाव में प्रत्येक निर्वाचित सदस्य द्वारा डाले जाने वाले मतों का मूल्य ज्ञात करने के लिए हम पहले 37,129,852 (राज्य की जनसंख्या) को 276 (कुल निर्वाचित सदस्यों की संख्या) से विभाजित करते हैं और इस से प्राप्त भागफल को 1/1000 से गुणन करते हैं । इससे यह 134,528.499/1000 भागफल प्राप्त होता हैं । इस प्रकार प्रत्येक निर्वाचित सदस्य के मतों का मूल्य 134,528.499/1000 अर्थात् 135 (यहाँ दशमलव संख्या 0.528 जो 0.5 से अधिक हैं इसलिए 01 मानी जाएगी) होगा ।
- संसद के प्रत्येक सदन के निर्वाचित सदस्य (MP) के मतों का मूल्य, सभी राज्यों के विधायकों के मतों के मूल्य को संसद के कुल निर्वाचित सदस्यों की संख्या से भाग देने पर प्राप्त होती हैं ।
- एक संसद सदस्य के मतों का मूल्य त्र (सभी राज्यों के विधयकों के मतों का कुल मूल्य) / (संसद के निर्वाचित सदस्यों की कुल संख्या)
- (0.5 से बड़ी भिन्न संख्या को 01 एवं अन्य भिन्नों को शून्य माना जाएगा) ।
- राष्ट्रपति का चुनाव आनुपातिक प्रतिनिधित्व के अनुसार एकल संक्रमणीय मत एवं गुप्त मतदान द्वारा होता हैं जो सफल उम्मीदवार की पूर्ण बहुमत से जीत सुनिश्चित करता हैं । किसी उम्मीदवार को,राष्ट्रपति के चुनाव में निर्वाचित होने के लिए, मतों का एक निश्चित कोटा प्राप्त करना आवश्यक हैं । मतों का यह निश्चित कोटा, कुल वैध मतों की संख्या में, निर्वाचित होने वाले कुल उम्मीदवारों (यहाँ केवल एक ही उम्मीदवार राष्ट्रपति के रूप में निर्वाचित होता हैं) की संख्या में एक जोड़कर प्राप्त संख्या द्वारा, भाग देने

- ***राष्ट्रपति की शक्तियाँ:*** *अनुच्छेद 85(2) के तहत राष्ट्रपति को न केवल सत्र बुलाने (आहूत करने) और समाप्त करने (सत्रावसान) का अधिकार है, बल्कि वे प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली मंत्रिपरिषद की सलाह पर लोकसभा को* ***समय से पूर्व भंग (विघटित)*** *भी कर सकते हैं।*
- ***विघटन और अंतराल:*** *विघटन की स्थिति में 6 महीने की समय सीमा का नियम इस प्रकार लागू होता है कि पिछली लोकसभा की अंतिम बैठक और नई लोकसभा की पहली बैठक के बीच 6 माह से अधिक का समय नहीं होना चाहिए। इसलिए विघटन के बाद 6 महीने के भीतर* ***आम चुनाव*** *कराकर नई सदन का गठन अनिवार्य हो जाता है।*
- ***स्थायी सदन:*** *यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि राष्ट्रपति के पास* ***राज्यसभा*** *को भंग करने का अधिकार नहीं है, क्योंकि यह एक* ***स्थायी सदन*** *है जो कभी भी पूरी तरह विघटित नहीं होता।*

विशेष अधिवेशन

- *राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा को नामंजूर करने के लिए लोकसभा का विशेष अधिवेशन तब बुलाया जा सकता है।*
- ***1/10 सदस्यों का नियम (गणपूर्ति):*** *संविधान के अनुच्छेद 100(3) के अनुसार, लोकसभा की बैठक आयोजित करने के लिए कुल सदस्य संख्या का* ***1/10 भाग (यानी 55 सदस्य)*** *उपस्थित होना अनिवार्य है।*
- ***अधिवेशन बुलाने की विशेष शक्ति:*** *यदि सदस्य राष्ट्रपति को सत्र बुलाने के लिए लिखित सूचना देते हैं (विशेषकर* ***अविश्वास प्रस्ताव*** *या* ***आपातकाल के अनुमोदन को वापस लेने*** *के संदर्भ में), तो वहां* ***कुल सदस्य संख्या का 1/10*** *(जो वर्तमान में* ***55 सदस्य*** *होते हैं, न कि 110) का नियम लागू होता है।*
- ***14 दिन की सूचना:*** *किसी भी विशेष संकल्प (जैसे लोकसभा अध्यक्ष को हटाना या अविश्वास प्रस्ताव) के लिए* ***14 दिन की पूर्व सूचना*** *आवश्यक होती है।*

1. ***अनुच्छेद 352 (आपातकाल):*** *केवल राष्ट्रीय आपातकाल को वापस लेने के लिए यदि लोकसभा के* ***1/10 सदस्य*** *(55 सदस्य) लिखित सूचना दें, तो राष्ट्रपति को 14 दिनों के भीतर विशेष बैठक बुलानी पड़ती है।*

- *ऐसी सूचना पर राष्ट्रपति या लोकसभाध्यक्ष अधिवेशन बुलाने के लिए बाध्य हैं।*

लोकसभाध्यक्ष *- लोकसभा अध्यक्ष लोकसभा का प्रमुख पदाधिकारी होता है और लोकसभा की सभी कार्यवाहियों का संचालन करता है -*

- *लोकसभा अध्यक्ष का निर्वाचन लोकसभा के सदस्यों के द्वारा किया जाता है।*
- *लोकसभा अध्यक्ष के निर्वाचन की तिथि राष्ट्रपति निश्चित करता है।*
- ***लोकसभाध्यक्ष लोकसभा के सामान्य सदस्य के रूप में शपथ लेता है।***
- *लोकसभाध्यक्ष को कार्यकारी अध्यक्ष शपथ ग्रहण कराता है।*
- *कार्यकारी अध्यक्ष जो लोकसभा में सबसे अधिक उम्र का सदस्य होता है।*
- *आगामी लोकसभा चुनाव के गठन के बाद उसके प्रथम अधिवेशन की प्रथम बैठक तक अपने पद पर बना रहता है।* ***लोकसभाध्यक्ष उपाध्यक्ष को अपना त्यागपत्र दे देता है।***
- ***लोकसभा के सदस्यों के बहुमत से पारित प्रस्ताव द्वारा अपने पद से हटाया जा सकता है।***
- *लोकसभाध्यक्ष का कार्य एवं शक्तियाँ लोकसभा के सम्बन्ध में काफ़ी अधिक है, जिनका वर्णन निम्न प्रकार किया जा सकता है-*

राज्यों में लोकसभा सदस्यों की संख्या

1.	उत्तर प्रदेश	80	15.	झारखण्ड	14
2.	महाराष्ट्र	48	16.	पंजाब	13
3.	पश्चिम बंगाल	42	17.	छत्तीसगढ़	11
4.	बिहार	40	18.	हरयाणा	10
5.	तमिलनाडु	39	19.	उत्तराखंड	5
6.	मध्य प्रदेश	29	20.	हिमांचल प्रदेश	4
7.	कर्नाटक	28	21.	अरुणांचल प्रदेश	2
8.	गुजरात	26	22.	गोवा	2
9.	राजस्थान	25	23.	मणिपुर	2
10.	आंध्र प्रदेश	25	24.	मेघालय	2
11.	ओडिशा	21	25.	त्रिपुरा	2
12.	केरल	20	26.	मिजोरम	1
13.	तेलंगाना	17	27.	नागालैंड	1
14.	असम	14	28.	सिक्किम	1

	केन्द्रशासित प्रदेश	लोकसभा सदस्यों की संख्या
1.	दिल्ली	7
2.	जम्मू और कश्मीर	5
3.	दादर और नगर हवेली तथा दमन और दीव	2
4.	चंडीगढ़	1
5.	लद्दाख	1
6.	लक्षद्वीप	1
7.	अंडमान और निकोबार द्वीप	1
8.	पुदुचेरी	1

राज्यसभा

संसद के दो सदन हैं - लोक सभा और राज्यसभा । राज्यसभा संसद का उच्च और द्वितीय सदन है। राज्यसभा राज्यों का प्रतिनिधित्व करती है ।

और इसके सदस्य विभिन्न राज्यों के प्रतिनिधि होते हैं। **यह एक स्थाई सदन है और कभी भंग नहीं होता, किन्तु इसके 1/3 सदस्य प्रति दो वर्ष के बाद स्थान खाली कर देते हैं,** जिनकी पूर्ति नए सदस्यों से होती है। भारत का उपराष्ट्रपति राज्यसभा का पदेन सभापति होता है।

- **निर्वाचित सदस्य:** वर्तमान में निर्वाचित **233 सदस्यों** में से 225 सदस्य राज्यों के प्रतिनिधि हैं और **8 सदस्य** केंद्रशासित प्रदेशों (3 दिल्ली, 1 पुडुचेरी और 4 जम्मू-कश्मीर से) का प्रतिनिधित्व करते हैं
- **कार्यकाल:** राज्यसभा एक **स्थायी सदन** है जो कभी भंग नहीं होता, लेकिन इसके एक-तिहाई सदस्य हर दूसरे वर्ष सेवानिवृत्त हो जाते हैं ।
- **मनोनीत सदस्य:** राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत 12 सदस्य वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रों जैसे कला, खेल और समाज सेवा से जुड़े हैं।

राज्यों के प्रतिनिधि –

- सदस्यों का निर्वाचन अप्रत्यक्ष रीति से होता है। राज्यों के प्रतिनिधि अपने राज्यों की विधानसभाओं के सदस्यों द्वारा निर्वाचित होते हैं।
- यह निर्वाचन आनुपातिक प्रतिनिधित्व पद्दति से तथा एकल संक्रमणीय मत विधि के अनुसार होता है।

भारतीय संविधान निर्माताओं ने राज्यसभा के गठन में दो प्रमुख प्रेरणा स्रोतों को अपनाया, जैसा कि उल्लेख किया है-

दक्षिण अफ्रीका से अप्रत्यक्ष निर्वाचन प्रणाली: राज्यसभा के अधिकांश सदस्यों का चुनाव सीधे जनता द्वारा नहीं, बल्कि राज्यों की विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्यों (MLAs) द्वारा आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के अनुसार एकल संक्रमणीय मत के माध्यम से किया जाता है। यह मॉडल दक्षिण अफ्रीकी संविधान से प्रेरित था।

आयरलैंड से मनोनयन प्रणाली: कला, साहित्य, विज्ञान, और समाज सेवा जैसे क्षेत्रों में विशेष ज्ञान या व्यावहारिक अनुभव रखने वाले 12 सदस्यों को राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत करने की प्रथा आयरलैंड के संविधान से ली गई है।

- राज्यसभा में प्रतिनिधियों की संख्या उस राज्य की जनसंख्या के आधार पर निश्चित की गई है।

राज्यसभा की सदस्यता के लिए योग्यताएँ

1. उसे भारत का नागरिक होना चाहिए
2. **उसकी आयु 30 वर्ष से कम न हो**
3. भारत सरकार या राज्य सरकार के अंतर्गत लाभ का पद न ग्रहण करे
4. पागल या दिवालिया न हो

राज्यसभा के अधिकार और कार्य

- धन तथा वित्त विधेयक राष्ट्रपति की पूर्व अनुमति से सदन में जाते हैं।
- धन विधेयक राज्यसभा में केवल 14 दिन के लिए भेजा जाता है यदि राज्यसभा द्वारा इसे 14 दिन में पारित न किया जाए तो इसे स्वतः पारित मान लिया जाता है।
- वित्त विधेयक राज्यसभा में भेजा ही नहीं जाता है।
- यदि किसी विधेयक पर दोनों सदनों में मतभेद हो, तो राष्ट्रपति दोनों सदनों का संयुक्त अधिवेशन बुला सकता है। संयुक्त बैठक में दोनों सदनों के सदस्यों के बहुमत से जो भी निर्णय हो जाए, वही अंतिम निर्णय समझा जायेगा
- राष्ट्रपति के निर्वाचन में राज्यसभा के निर्वाचित सदस्य भाग लेते है।
- राज्यसभा के सदस्य भी मंत्री नियुक्त हो सकते है।
- **आपातकालीन उद्घोषणा का अनुमोदन लोक सभा के साथ-ही-साथ राज्यसभा द्वारा भी होना आवश्यक है।**
- राष्ट्रपति / उच्चतम तथा उच्च न्यायालयों के न्यायाधीश के विरुद्ध महाभियोग (Impeachment) लगाने का अधिकार लोक सभा के सामान राज्य सभा को भी है।

राज्यों में राज्य सभा सदस्यों की संख्या

क्र. सं.	राज्य	स्थानों की संख्या
1.	आंध्र प्रदेश	11
2.	अरुणाचल प्रदेश	1
3.	असम	7
4.	बिहार	16
5.	छत्तीसगढ़	5

अध्याय – 14

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग

राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग **एक विधिक निकाय** है, **परंतु यह एक संविधानिक निकाय नहीं है। इसकी स्थापना 12 अक्तूबर 1993 में मानव सुरक्षा अधिकार कानून के तहत की गई थी।अधिनियम की धारा -2 (1)A में मानवाधिकारो को परिभाषित किया गया।**

मानवाधिकार की रक्षा करना इस आयोग का प्रमुख कार्य है। भारतीय नागरिकों को संविधान के द्वारा जो मूल अधिकार दिये गये हैं उसकी रक्षा करना इसका प्रमुख कर्त्तव्य होता है।

वर्तमान अध्यक्षः न्यायमूर्ति न्यायमूर्ति वी. रामसुब्रमण्यन (भारत के सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश)।

आयोग का गठन

1. आयोग बहुसदस्यीय है **जिसमें एक अध्यक्ष एवं पाच सदस्य होते हैं।**
2. इसका अध्यक्ष उच्चतम न्यायालय का सेवानिवृत न्यायाधीश होनी चाहिए।
3. अन्य सदस्यों में सुप्रीम कोर्ट के तथा हाई कोर्ट के सेवानिवृत न्यायाधीश इसके सदस्य हो सकते हैं।
4. दो ऐसे व्यक्ति जिन्हें मानवाधिकार कानून का व्यवहारिक ज्ञान हो। इसके सदस्य हो सकते हैं।
5. इसके अलावा राष्ट्रीय पिछड़ा आयोग, अल्पसंख्यक आयोग, जातीय / जनजातीय आयोगों के अध्यक्ष इसके स्वतः सदस्य होते हैं।
6. वेतन भते -केंद्र सरकार द्वारा परन्तु निउक्ति के उपरांत अलाभकारी परिवर्तन नहीं
6. अध्यक्ष एवं सदस्यों की नियुक्ति राष्ट्रपति के दिशा निर्देशों पर होता है।
7. इस नियुक्ति कमेटी में लोकसभा का स्पीकर, राज्यसभा का उपाध्यक्ष, विपक्ष का नेता और गृह मंत्री शामिल होते हैं
8. **अध्यक्ष का कार्यकाल 3 वर्षों तक होता है। या वह अधिकतम 70 वर्ष की आयु तक पद धारण कर सकता है।**

   पुन : नियुक्ति के लिए पात्र हैं।

   2019 का संशोधनः इस अधिनियम में 2019 में महत्वपूर्ण बदलाव किए गए थे:

   - अब **सुप्रीम कोर्ट के किसी भी न्यायाधीश** (न कि केवल पूर्व मुख्य न्यायाधीश) को अध्यक्ष बनाया जा सकता है।
   - अध्यक्ष और सदस्यों का कार्यकाल **5 वर्ष से घटाकर 3 वर्ष** कर दिया गया है

9. अध्यक्ष एवं सदस्य यह पद धारण करने के बाद केंद्रीय एवं राज्य स्तर पर अन्य किसी पद को धारण नहीं कर सकते।

आयोग के प्रमुख कार्य

1. मानवाधिकारों के उल्लंघन की जांच करना खासतौर पर लोकसेवकों एवं पदाधिकारियों की तरफ से।
2. मानवाधिकार के उल्लंघन के मामले में न्याय दिलवाले के उद्देश्य से न्यायालय का सहारा लेना ।
3. समय-समय पर जेलों तथा अन्य स्थानों की छानबीन करना तथा मानवीय अधिकारों को लागू करवाना।
4. मानवाधिकार की रक्षा के लिए संशोधन की सलाह देना।
5. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समझौता का मूल्यांकन करना ।
6. मानवाधिकारों से संबंधित शोध पत्रों को जारी करना तथा लागू करवाना।
7. मानवाधिकारों को आम जनता में लोकप्रिय बनाना तथा जन जागरूकता लाना।
8. वे सभी गैर सरकारी संस्थाएं जो मानवाधिकार के लिए कार्य कर रही हैं, को प्रोत्साहित करना ।
9. उन सभी कदमों को उठाना जिसके तहत मानवाधिकारों की रक्षा की जा सके।

सारांश

- राष्ट्रीय मानवधिकार आयोग, एक सांविधिक (संवैधानिक नहीं) निकाय है। इसका गठन संसद में पारित अधिनियम के अंतर्गत हुआ था, जिसका नाम था, मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993।
- यह आयोग देश में मानवधिकारों का प्रहरी है अर्थात् संविधान द्वारा अभिनिश्चित या अन्तर्राष्टीय संधियों में निर्मित और भारत में न्यायालय द्वारा अधोरोपित किए जाने वाले जीवन, स्वतंत्रता समता और व्यक्तिगत मर्यादा में संबंधित अधिकार।
- आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री के नेतृत्व वाली गठित छः सदस्यीय समिति की सिफारिश पर होती है समिति में प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष राज्यसभा का उपसभापति संसद के दोनों सदनों विपक्षी दल के नेता, एवं केन्द्रीय गृह मंत्री होते हैं।
- आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों का कार्यकाल 3 वर्ष अथवा जब उनकी उम्र 70 वर्ष हो (जो भी पहले) का होता है। ये पुनः नियुक्ति के पात्र हैं।
- आयोग एक बहु-सदस्यीय संस्था है जिसमें एक अध्यक्ष व 5 सदस्य होते हैं। आयोग का अध्यक्ष भारत का कोई सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश या एक उच्चतम न्यायालय का न्यायाधीश होना चाहिए।
- आयोग के पास सिविल न्यायालय जैसे सभी अधिकार व शक्तियाँ है तथा इसका चरित्र भी न्यायिक है। आयोग केन्द्र अथवा राज्य सरकार से